Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वामी विवेकानन्द।

Onkar Press Allahabad.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओंकार आदर्श चरितमाला का प्रथमपुष्प।

श्री स्वामी विवेकानन्द

(जीवनी और राष्ट्रीय, सामाजिक और धार्मिक विचारों का संग्रह)

"उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत"

लेखक

पं० नन्दकुमारदेव शर्म्मा

सम्पादक तथा प्रकाशक

पं० ओङ्कारनाथ वाजपेयी

42928

"Our youngmen must be strong first of all Religion will come afterwards. Be strong my young friends, that is my advicc to you. You will be nearer to heaven through foot-ball than through the study of the Gita.........you will understand Gita better with your biceps, your muscles a little stronger, you will understand the mighty genius and the mighty strength of Krishna better with a little of strong blood in you You will understand the Upahishads better and the glory of Atman, when your body stands firm upon your feet and you feel yourselves as men" —*Swami Vivekananda.*

तृतीय वार]

[मूल्य ।)

All Rights Reserved:

Printed by Pt. Onkar Nath Bajpai at the Onkar Press, Allahabad.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

समर्पण

प्यारे नवयुवको !

आज धुलेएड़ी है, होली का हुल्लड़ चारों ओर मच रहा है। स्थान स्थान पर खुराफ़ात; वाहियात तथा रङ्ग गुलाल की धूम मच रही है। प्यारे मित्रो ! क्या तुम भी इसी प्रवाह में बहना चाहते हो ? इस प्रश्न के करने से मेरा यह मतलब नहीं है कि तुम होली मत खेलो, नहीं नहीं तुम होली खेलो और ज़रूर खेलो, भले ही रङ्ग की पिचकारी छोड़ो। पर कैसे रङ्ग की पिचकारी कैसी होली इसका भी ध्यान रखो। ऐसी होली खेलो, ऐसे रङ्ग की पिचकारी छोड़ो जिससे अब तक तुम्हें जो यन्त्रणायें होली हैं दूर हों। अपने को तथा अपने इष्ट मित्रों को ज्ञान की पिचकारी का निशाना बनाओ, जिससे अज्ञान दूर हो बस यही सोच कर आज मैं तुम्हें अपना निशाना बनाता हूं ज़रा सम्हल जाओ। स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों से काट छांट कर इस पिचकारी में जो रङ्ग भरा है बस वही रङ्ग तुम पर छोड़ता हूं। लीजिये, इस रङ्ग को अपने हृदय में रङ्ग लीजियेगा, वृद्धा भारतमाता की सेवा सुश्रूषा से विमुख न हूजियेगा। उनकी सारी आशालता तुम्हीं पर है। वह तुम्हारी ही बाट जोह रही है उसे निराश मत करो जननी की सच्ची सन्तान बनो। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का निरन्तर जाप करते रहो।

तुम्हारा भाई—नन्द०

43,58

42114

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निवेदन

श्री स्वामी विवेकानन्द का नाम पाठकों से अविदित नहीं है। यह वही स्वामी विवेकानन्द हैं जिन्होंने अमेरिका जैसे प्रकृतिवादी देश में वेदान्त की ध्वजा फहराने के अतिरिक्त, भारतीय राष्ट्र निर्माण तथा नव्य-भारत के चरित्र गठन में भाग लिया था। भारतवर्ष में जो जागृति हो रही है विशेषतः बङ्गाल में, उसमें स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों का ही कुछ प्रभाव मानना पड़ेगा। यही सोच कर स्वामी जी की जीवनी और उनके उपदेशों का अति संक्षिप्त सारांश हिन्दी पाठकों की सेवा में अर्पित किया जाताहै। कहा नहीं जा सकता कि पाठकों को यह उपहार पसन्द आवेगा अथवा नहीं।

अङ्गरेज़ी भाषा में स्वामी जी के उपदेशों, पत्रों तथा अन्य लेखों का कई भागों में क्रमबद्ध अच्छा संग्रह है। भारतवर्ष की अन्यान्य भाषाओं में उनके उपदेशों कासंग्रह होगया है, पर खेद है अभीतक हिन्दी इससे खाली है। हिन्दी भाषा के साधारण पाठक जो अङ्गरेज़ी तथा अन्य भाषाओं को नहीं जानते हैं, वे स्वामी विवेकानन्द के विचारों से अभी तक अपरिचित हैं। अवश्य ही उनकी वक्तृताओं में से किसी २ का अनुवाद कभी कभी „सरस्वती" तथा अन्य मासिक पत्रिकाओं में निकला है और स्वामी जी के पत्र व्यवहार के प्रथम खण्ड का हिन्दी अनुवाद हुआ है, तथापि स्वामी जी के राष्ट्रीय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सामाजिक तथा धार्मिक विचारों का शृङ्खलाबद्ध संग्रह नहीं हुआ है, जिसकी बड़ी आवश्यकता है। यह विचार कर मैंने स्वामी जी के समस्त उपदेश और सम्पूर्ण विचार तो नहीं पर हां उनकी संक्षिप्त जीवनी और उनके राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक विचारों का अति संक्षिप्त संग्रह इस छोटी सी पुस्तक में कर दिया है। परन्तु यह निश्चय है कि मुझे इसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई है। क्योंकि प्रथम तो स्वामीजी के उपदेश अंगरेज़ी भाषा में हैं। मैं अंगरेज़ी का पण्डित नहीं हूं। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना बड़ा कठिन है, विशेषतः अंगरेज़ी से करते समय तो पग पग पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अवश्य ही स्वामी जी की भाषा बड़ी सरल, रसीली और हृदयग्राही है पर जैसी अङ्गरेज़ी उनकी सरल है वैसे ही उनके भाव बड़े कठिन हैं, भाषा बड़ी जोशीली है। अनुवाद में उनके वैसे ही भाव और भाषा का जोश रहना असम्भव सा प्रतीत होता है। परन्तु मैंने इसकी चेष्टा अवश्य की है। कहीं उनके शब्दों का ज्यों का त्यों अनुवाद कर दिया हैं। कहीं उनके भावों को अपनी भाषा में लिखा है और कहीं उनके वाक्यों को तोड़ मरोड़ कर कुछ शब्द अपनी ओर से घटा बढ़ा भी दिया है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके अतिरिक्त एक और भी भय है कि मैंने उनके इतने विचार समूह में से अति संक्षिप्त विचारों को संग्रह करने की चेष्टा की है जिससे अनेक त्रुटियां रहने की आशङ्का है। आशा है सज्जन जन इसका विचार करके कि जब तक कोई विद्वान् ऐसे कार्यों में हाथ डालनेका प्रयत्न न करे तब तक कुछ न करने से कुछ करना अच्छा है, मेरी त्रुटियों को क्षमाकरेंगे।

हमारे देश में आज कल मतभेद और सिद्धान्त विरोध का रोग प्रबल हो रहा है। इस रोग ने हमको यहाँ तक जकड़ डाला है कि चाहे जैसा कोई विद्वान् क्यों न हो पर मत भेद के कारण उसके विचारों का प्रचार नहीं करना चाहते हैं। अन्ध भक्ति की भी हम लोगों के हृदय पर ऐसी छाप बैठ गई है कि अन्य मतावलम्बियों के गुणों के परखने में अपने हृदय की सङ्कीर्णता का परिचय दिया करते हैं। स्मरण रखना चाहिये हमारे ऋषि मुनियोंका कथन है "शत्रोरपिगुणावाच्याः दोषा वाच्या गुरोरपि" अर्थात् शत्रुओं के भी गुणों का बखान करना चाहिये और गुरू के भी दोषों का बिना किसी सङ्कोच के वर्णन करना चाहिये। पर अफ़सोस! आज सिद्धान्त विरोध और मतभेद ने हमारे हृदय से ऋषि मुनियों के इस वाक्य को दूर कर दिया है। स्मरण रखना चाहिये जब तक संसार है तब तक लाखों चेष्टायें करने पर भी मत भेद और सिद्धान्त विरोध दूर नहीं हो सकता है और मेरे विचार में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसका दूर न होना ही अच्छा है। मतभेद और सिद्धान्त विरोध कोई बुरी चीज़ नहीं प्रत्युत अच्छी है। मत भेद और सिद्धान्त विरोध जीवनका लक्षण है। जब तक मतभेद और सिद्धान्त विरोध न हो तब तक किसी विषय का निर्माण होना कठिन है। क्या देखते नहीं हो स्त्री-पुरुष और बाप-बेटे तक में बहुत सी घरेलू बातों के सम्बन्ध में मत भेद रहता है तब धार्मिक सामाजिक एवम राष्ट्रीय जैसे भारी विषयों में मतभेद होना स्वाभाविक ही है और इन विषयों पर जितना मतभेद हो, उस पर जितना विचार किया जाय उतनाही अच्छा है। इसके लिये इससे बढ़कर और कोई उपाय नहीं है जितने महापुरुष हमारे यहां हुये हैं उनके विचारों पर विचार किया जाय। मेरी इच्छा इस कार्य के बीड़ा उठाने की बहुत दिनों से हो रही है, परन्तु कार्य के साधनों के अभाव से इच्छा ही रही आई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकी है इस इच्छा के वशी भूत होकर ही मैंने पहले पहिल सन् १९०५ में इस पुस्तक के थोड़े से अंश को बम्बई के "ज्ञान सागर" छापेखाने से जो मासिक पत्र "ज्ञान सागर" निकलता था, उसके दो अंकों में लिखा था। पर पीछे कई कारणों से मेरा उस पत्रसे सम्बन्ध नहीं रहा। बस यह निबन्ध भी छपना बन्द होगया। कई वर्ष पीछे जब सन्१९११ में मैं "बिहार बन्धु" से सम्बन्ध परित्याग करके अपनी जन्मभूमि मथुरा चला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आया था, तब मैंने इस निबन्ध का एक अंश(स्वामी विवेकानन्द की जीवनी मात्र) ज्वालापुर महाविद्यालय से प्रकाशित होनेवाले भारतोदय नामक मासिक पत्र चतुर्थ वर्ष के चतुर्थ खण्ड में लिखा था। परन्तु कई कामों में व्यस्त रहने के कारण यह निबन्ध अधूरा रहगया। अब कई मित्रों के अनुरोध से पूरा किया है।

यदि हिन्दी रसिकों ने इसको कुछ भी अपनाया तो मैं शीघ्र ही भारतवर्ष तथा अन्य देशों के महापुरुषों के कार्य तथा विचारों को प्रकाशित करने की चेष्टा करूंगा।

उपसंहार में फिर एक बार यही निवेदन है कि जो कुछ भूल चूक हुई हो उसको सहृदय पाठक क्षमा करें।

मुझे इस निबन्ध के लिखने में निम्न पुस्तकों से सहायता प्राप्त हुई है जिनका मैं विशेष आभारी हूं।

(१) From Columbo to Almora (Second edition).

(२) Swami Vivekananda (Speeches and writings, G. A. Nateson & Co., Madras).

(६) Swami Vivekananda, His life and teachings (G, A. Nateson & Co.)

(४) स्वामी विवेकानन्द का पत्र व्यहार प्रथम खण्ड (हिन्दी)

५) स्वामी विवेकानन्दनां पत्रते सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(६) Indian Nation Builders (Ganesh & Co. Madras.

(७.) उदबोधन (वङ्ग भाषा के पत्र के कुछ अङ्क)

(८) प्रबुद्ध भारत (अङ्गरेज़ी भाषा के मासिक पत्र के सन् १९०३-४ के कुछ अङ्क)

चैत्रकृष्ण पञ्चमी
मंगलवार सं० १९६९
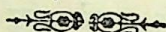
निवेदक
नन्द०
दिल्ली

प्रिय पाठको। मुझे बड़ा हर्ष है कि आपने आशा से अधिक इस पुस्तक का आदर किया है। थोड़े ही समय में इसके तीन संस्करण निकल गये। पं० नन्द कुमार देव शर्मा ने ओंकार आदर्श चरित माला में कई जीवन चरित और लिखेहैं आशा है उन्हे भी आप पढ़कर लेखक और प्रकाशक का उत्साह वढ़ावें गे।

निवेदक
ओंकारनाथ वाजपेयी

आश्विन शुक्ल
८ बुद्धवार
सं० १९७२

57/6
(9)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वामी विवेकानन्द की जीवनी और उनके विचार

प्रथमाध्याय।

संख्या 802
28-8-63

प्रस्तावना।

[१]

भारत वर्ष ही में नहीं बल्कि संसार के अन्य देशों के इतिहासों से भी यह ज्ञात होता है कि समय समय पर ऐसे अनेक विद्वान् महात्मा और योगी जन जन्म लेते रहते हैं, जो अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल से जन समाज के समाजिक, धार्मिक और राजनैतिक विचारों में हलचल पैदाकर देते हैं। भारतवर्ष के विषय में यह अलौकिक बात है कि इस देश का कोई भी युग ऐसे महापुरुषों से ख़ाली नहीं जाता है। स्वामी विवेकानन्द भी भारतमाता के उन सपूतों में से एक थे, जिन्होंने वर्त्तमान और गत शताब्दितों में भारत माता की सन्तानों के विचार सुधारनें और राष्ट्र निर्माण में भाग लिया था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वंश परिचय, बाल्यकाल और छात्रा-वस्था ।

आज जिस बङ्गाल ने अपने राजनैतिक जीवन से समस्त भारतवर्ष में नवीन युग उपस्थित कर दिया है उस बङ्गाल को ही स्वामी विवेकानन्द की जन्म भूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ है। जो बङ्गभूमि, गत दो शताब्दियों में राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशव चन्द्र सेन, द्वारकानाथ विद्याभूषण, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, डाक्टर राजेन्द्र लाल मित्र, राय दीनबन्धु मित्र, बङ्किम चन्द्र चटर्जी, कृष्णदास पाल, कृष्ण मोहन बनर्जी, माईकेल मधुसूदन दत्तादि महानुभावों को उत्पन्न करने का अभिमान प्राप्त कर चुकी है, उसी बङ्गमाता को स्वामी विवेकानन्द के उत्पन्न करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ७ वीं जनवरी सन् १८६२ को कलकत्ते के निकट किसी गांव में स्वामी जी का जन्म हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था। वे एटर्नी-एट-ला (Attorney at--law) थे और कलकत्ता हाईकोर्ट में प्रेक्टिस (वकालत) करते थे। इनकी माता अभी तक जीवित थीं। उनकी स्मरण शक्ति के विषय में कहा जाता है कि इतनी तीव्र थी कि जिस गीत को वे एक बार सुन लेती थीं, उसको कभी नहीं भूलती थीं। भला जब माता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इतनी चतुर हो तब सन्तान क्यों न बुद्धिमान होगी ? फ्रांस देश के प्रसिद्ध वीर नेपोलियन बोनापार्ट के इस कथन में अणुमात्र भी सन्देह नहीं है कि "माता पर ही सन्तान के भले बुरे भावी आचरण निर्भर हैं"। चाहे जिस महापुरुष के चरित्र अवलोकन कीजियेगा तो पता लगेगा कि उसकी माता के स्वभाव का उसके जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ा है। सो माता की प्रबलबुद्धि होने के कारण स्वामी विवेकानन्द का प्रतिभाशाली होना कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। स्वामी विवेकानन्द की वृद्धा माता के विचार कैसे थे। इसका पता केवल इस घटना से लगता है कि जिस समय उनके दूसरे पुत्र अर्थात् विवेकानन्द के सहोदर बाबू भूपेन्द्र नाथ दत्त को कलकत्ते के एक अख़बार में कुछ आपत्ति जनक लेख लिखने के कारण जेल की सज़ा हुई थी उस समय उनकी माता तनिक भी विचलित नहीं हुईं। ऐसी विपत्तिमें भी अतुलनीय धैर्य का परिचय दिया। जब कुछ स्त्रियों ने उनके प्रति इस विपत्ति में समवेदना और सहानुभूति प्रकट की तब भी वे धैर्य्यच्युत नहीं हुईं। एक स्त्री का विशेषतया भारत-वर्षीय अबला का ऐसी विपत्ति में इस भांति धीरज रखना अत्यंत आश्चर्य दायक है। क्योंकि भारतवर्ष में अपत्यस्नेह की मात्रा बढ़ी हुई है। अस्तु जो कुछ हो, मेरे कहने का सारांश यही है कि वृद्धावस्था में जिसकी माता ऐसा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धैर्य्यवती हो उसके पुत्र से जितने अच्छे अच्छे कार्य परमात्मा करावे, उतने ही थोड़े हैं। इनके जन्म का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। संन्यासी होने पर पूर्वनाम बदल कर विवेकानन्द नाम रखा गया।

बालापन में स्वामी विवेकानन्द ने नरेन्द्रनाथ रहते समय ही अपनी अनुपम विचार शक्ति, प्रखर बुद्धि और चमत्कारिक प्रतिभा से सब को चकित और स्तम्भित कर दिया था। "होनहार विरवान के होत चीकने पात" इस लोकोक्ति के अनुसार छात्रावस्था में ही इन्होंने यूरोपियन दर्शन शास्त्र में अच्छी जानकारी प्राप्त करली थी। जब वे कालेज में पढ़ते थे तब ही उन्होंने हर्वट स्पेन्सर के दार्शनिक विचारों की अलोचना की और अपनी वह आलोचना हर्वर्टस्पेन्सर के पास भेज दी। महात्मा स्पेन्सर इनकी आलोचना देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुये और सत्य के अनुसन्धान करने के लिये इनको उत्साहित किया।

———

गुरू से भेंट

सन् १८८४ से १८८६

कालेज में अध्ययन करते समय यह नास्तिक हो गये थे। उस सयय इनका ईश्वर, जीव इत्यादि पर कुछ विश्वास नहीं

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रहा। उन दिनों बङ्गाल में ही नहीं सारे भारतवर्ष में धर्म विप्लव मच रहा था। बङ्गदेश में क्रिश्चियन मत की उत्ताल तरङ्गों को रोकने के लिये ब्रह्मसमाज की नींव पड़ चुकी थी। कृष्णमोहन बनर्जी, कालीचरण बनर्जी, माईकेलमधुसूदन दत्तादि जैसे विद्वान् भी प्रभु ईसा मसीह के शरणागत हो चुके थे। कहने को ब्रह्मसमाज क्रिश्चियन मत की ऊंची तरङ्गों के रोकने को स्थापित हुआ था, परन्तु कुछ परिवर्तन रूप में उसके द्वारा क्रिश्चियन मत के लिये नयी सड़क बनने लग गई थी। जिसकी स्थिति अभी तक ज्यों की त्यों है। ब्रह्म-समाज के प्रवीण नायक, बाबू केशवचन्द्र सेन की वाक्पटुता के प्रभाव से हिन्दुओं के धार्मिक विचार और विश्वास में परिवर्तन हो गया था। ऐसे कठिन धर्म विप्लव के समय में स्वामी विवेकानन्द भी ब्रह्मसमाज के विचारों की ओर झुक गये थे। परन्तु उनकी ब्रह्मसमाज से कुछ तृप्ति नहीं हुई। इस बीच में उन्होंने कलकत्ता यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) से बी० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण करली थी। और कानून की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, साथ ही अपने संशयों की निवृत्ति के लिये कितने ही व्यक्तियों के पास गये पर कहीं भी उनकी शङ्का का समाधान नहीं हुआ। एक दिन उनके पितृव्य (चाचा) जो रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे, उनको अपने साथ वहां लेगये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

*महात्मा रामकृष्ण परमहंस एक पहुंचे हुये साधु थे। आज कल के कनफटे चिमटा हाथ में लिये, "दाता भला करें" कहने वाले साधुओं की तरह नहीं थे। जिस तरह मथुरा के प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती को स्वामी दयानन्द

---

*श्री रामकृष्ण परमहंस स्वामी विवेकानन्द केगुरू थे। स्वामी विवेकानन्द तथा उनके साथी श्री रामकृष्ण परम हंस को अवतार मानते हैं। परन्तु वास्तव में रामकृष्ण परमहंस ने कभी स्वयं अवतार होने का दावा नहीं किया था। सन् १६१० में अङ्गरेज़ी के प्रसिद्ध लेखक और ब्रह्मसमाज के प्रख्यात नायक पं० शिवनाथ शास्त्री एम० ए० ने माडर्न रिव्यू में "Men as I have seen" शीर्षक लेखावली लिखी थी जिसमें उन्होने बङ्गाल के प्रसिद्ध पुरुषों के दर्शनों का उनके हृदय पर जो प्रभाव पड़ा था वह दिखलाया था उक्त लेखावली में उन्होंने उक्त परमहंसजी का भी वर्णन किया है, जो नवम्बर सन् १६१० के माडर्न रिव्यू के अङ्क में छपा है। एक बार उक्त परमहंसजी की पीड़ितावस्था में पंडित शिवनाथ शास्त्री उनसे मिलने गये थे। तबतो उक्त शास्त्रीजी ने परमहंसजी से कहा:—

As there are many edition of a book so there have been many editions of God Almighty and your disciples are about to make you a new one. He too smiled and said:-Just fancy God Almighty dying of a cancer in the throat what great fools these fellows must be."—The Modern Review of November 1910. जिस भांति एक पुस्तक के कितने ही संस्करण होते हैं उसी भांति सर्व शक्तिमान जगदीश्वर के भी बहुत से संस्करण हुए हैं और अब आपके शिष्यवर्ग आप का नया संस्करण करने वाले हैं। इस पर परमहंसजी हंसे और कहा:—सोचो तो सही, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर गले में फोड़ा होने के कारण मर रहा है, ये मनुष्य कैसे मूर्ख हैं?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरस्वती को देख कर, उनके द्वारा अष्टाध्यायी और महाभाष्य के भारतवर्ष में पठन पाठन की प्रणाली के प्रचार की आशा हुई थी वैसे ही श्री रामकृष्ण परमहंस को हमारे चरित्रनायक नरेन्द्रनाथ दत्त (स्वामी विवेकानन्द) को देख कर यह आशा हुई कि इसके द्वारा मेरे सिद्धान्तों का प्रचार होगा। श्रीरामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्रनाथ दत्त को देखते ही पूछाः—"क्या तुम धर्म विषयक कुछ भजन गा सकते हो?" इसके उत्तर में नरेन्द्रनाथ दत्त ने कहाः—"हां गा सकता हूं"। पीछे उन्होंने दो तीन भजन अपनी स्वाभाविक मधुर ध्वनि में गाये। उनके भजन गाने से परमहंसजी बहुत प्रसन्न हुये। तब से वे परमहंसजी का सत्सङ्ग करने लगे और उनके शिष्य तथा वेदान्तमत के दृढ़ अनुयायी हो गये थे।

सन् १८८६ का वर्ष महात्मा रामकृष्ण परमहंस के शिष्यों के लिये ही नहीं किन्तु समस्त भारतवर्ष के लिये बुरा था। उस वर्ष की १६वीं अगस्त को महात्मा रामकृष्ण परमहंस इस भारतमाता की गोद खाली कर गये। उनके शिष्य और भक्तों को उनकी वियोग वेदना सहन करनी पड़ी। परमहंसजी के देहान्त के कारण समस्त धर्मानुरागियों में शोक की ज्वाला प्रज्वलित हो गई थी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू स्मारक

उनके देहान्त हो जाने के पश्चात् उनकी ग्रेज्यूएट शिष्य मंडली को उनके वेदान्त सम्बन्धी विचारों के प्रचार करने की अपरिमित लालसा हुई। जिस युवावस्था में हतभाग्य इस देश के नवयुवकों को भोग विलास के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं है वहां रामकृष्ण परमहंस के नवयुवक शिष्यों ने अपनी तरुणावस्था का कुछ विचार न करके सांसारिक माया से मोह हटा लिया और अपने गुरू के उपदेशों के प्रचार करने की असीम चेष्टा करने लगे। उन्होंने अपने समस्त सुख चैन को लात मार कर हिन्दू जाति और भारतवर्ष की सेवा करने की प्रतिज्ञा की। परमहंस जी की ग्रेज्यूएट शिष्य-मंडली ने अपने पहले नाम बदल कर विवेकानन्द अभयानन्द ब्रह्मानन्द, रामकृष्णानन्द, अद्वयानन्द, त्रिगुणातीतानन्द, निरंजनानन्द आदि नवीन नाम धारण कर लिये। हमारे चरित्र नायक नरेन्द्रनाथ दत्त ने अपना नाम विवेकानन्द रखा।

अज्ञातवास और भारत भ्रमण

सन् १८८७–१८९२

सबसे पहले स्वामी विवेकानन्द हिमालय शिखर पर छः वर्ष तक एकान्तवास में रहे। फिर वहांसे तिब्बत गये वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्हों ने बौद्धधर्म सम्बन्धी जानकारी प्राप्तकी। फिर भारत-वर्ष में जहां तहां उपदेश करते रहे। इस भ्रमण में वह राज-पूताने की प्रसिद्ध रियासत खेतड़ी गये थे। उस समय उन्हों-ने भारतवर्ष में दूर दूर तक भ्रमण किया था। मद्रास और पश्चिमी किनारे त्रिवेन्ड्रम तक गये थे। जहां कहीं गये, वहीं उन्हें नव्यभारत के निर्माण करने में सफलता प्राप्त हुई थी।

अमेरिका यात्रा

किन्तु स्वामी विवेकानन्द के विकास होने का कारण शिकागो की रिलिजिस पार्लीमेंट (धर्मसम्मेलन) थी * श्री

---

*शिकागो में स्वमी विवेकानन्द की सफलता सुनकर थियोसोफ़िकल सोसाईटी ने भी वाह वाह लूटनी चाही थी। यह अफ़वाह थी कि अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द को थियोसोफ़िकल सोसाईटी के कारण सफलता प्राप्त हुई। स्वयं स्वामी विवेकानन्द को मद्रास में इस चर्चा का अपनी वक्तृता में प्रतिवाद करना पड़ा था था। वहां पर उन्हों ने "My plane of Campaign" शीर्षक जो वक्तृता दी थी उसमें स्पष्ट कहा था: 'There is another talk going round that the Theosophists helped the little achievements of mine in America and in England. I have to tell you in plain words that every bit of it is wrong, every bit of it is untrue.' (From Columbo to Almora, page 117.) इसका भावार्थ यह है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामनाथ के स्वर्गीय महाराज ने स्वामी जी को भेजने का खर्च उठाया था।

देशी भाषा के समाचार पत्रों में भेड़ियाधसान बहुत दिनों से चली आती है। हिन्दी भाषा के कई समाचार पत्र तो बिना किसी परिणाम को पहुंचे ही प्रबल विरोध करने को उतारू हो

कि चारों ओर यह चर्चा होरही है इङ्गलेंड और अमेरिका में मुझे जो किंचित मात्र सफलता प्राप्त हुई है उस में थियोसोफिस्टोंने सहायता दी है। इस विषय में मुझे आप लोगों से स्पष्ट कह देना है कि यह चर्चा नितान्त अशुद्ध और असत्य है। आगे इस वृत्तान्त से पता लगता है थियोसोफ़िस्टों ने स्वामी जी को सहायता देने के स्थान में उनके कामों में बाधा उपस्थित करने का प्रयत्न किया होगा। यद्यपि उन्हों ने थियोसोफ़िस्टों के विरोध करने के विषय में स्पस्ट नहीं कहा है तथापि आगे उन्होंने जो कुछ कहा है, उससे ऐसी ध्वनि निकलती है। स्वामीजी के शब्द ये हैं:—

"We hear so much talk in this world of libral ideas and sympathy with differences of opinion, that is very good, but as a fact we find that one sympathises with another so long as the other believes in everything he has got to say, as soon as he dares to differ, that sympathy is gone, that love vanishes. There are others again, who have their own axes to grind and if any arises in a country which pervents the grinding of their own axes, their hearts burn, any amount of hatred comes out, and they do not know, what to do ?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४२२३६

जाते हैं । जो पत्र सम्पादक काशी नरेश के विलायत यात्राकी व्यवस्था देने पर भी अपने पत्र में मिथ्या समाचार छापदेते हैं कि उन्होंने व्यवस्था नहीं दी और जब काशी नरेश की व्यवस्था उनकी सेवा में पहुंचाई जावे तो भी वे अपनी बात का प्रतिवाद छापना उचित नहीं समझते हैं तब ऐसे समाचार पत्रों से आशा ही क्या की जा सकती थी ? ऐसे सङ्कीर्ण नीतिवाले समाचार पत्रों ने स्वामी विवेकानन्द के अमेरिका जाने का प्रतिवाद किया तो आश्चर्य ही क्या है ? हिन्दी के स्वर्गीय एक "कोविद रत्न"ने तो टेसू लिखकर ही विवेकानन्द की दिल्लगी उड़ाई थी । इस पर उदार हृदय पाठकों को क्षुब्ध नहीं होना चाहिये । क्योंकि आज कल भी हिन्दी भाषा के कितने ही समाचार पत्रों के ऐसे ऐसे सभ्य और शिक्षित सम्पादक हैं, जो अपने प्रतिवादियों को "टेसू की उम्मेदवारी या "होली का नाच" लिखकर गालियां दिया करते हैं । कितने ही ऐसे सम्पादक हैं जो हिन्दू समाज से पुरानी कुप्रथाओं को उठाने में पाप समझते हैं हिन्दी ही के पत्र क्यों बङ्गभाषा तथा उर्दू के समाचार पत्र भी इस रोग से मुक्त नहीं है । अतएव पुरानी चाल के अंग्रेज़ी भाषा के समाचार पत्रों ने भी स्वामी विवेकानन्द की विलायत यात्रा का प्रबल प्रतिवाद किया था, पर इस विरोध से स्वामी विवेकानन्द की यात्रा में कुछ रुकावट नहीं हुई । वे किसी विरोध बाधा से भयभीत न होकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"करतल भिक्षा, तरुतल वासा" इस सिद्धान्तको धारणकरके जापान होते हुये अमेरिका पहुंच हीं तो गये ।

अमेरिका प्रवास

कहा जाता है, परमेश्वर उसकी सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करता है। जब स्वामी विवेकानन्द अपने आत्मिक बल के सहारे अमेरिका जाने को तैयार हुये तो परमेश्वर ने भी उनको सहायता दी। अमेरिका में पग रखते ही उनके धैर्य की परीक्षा का समय उपस्थित हुआ। जिस समय वे अमेरिका पहुंचे, उस समय उनके पास जो थोड़ा सा रुपया था, निबट गया। वहां उनके भूखे मरने की नौबत तक आगई थी। एक दिन जब वे बोस्टन के पास एक गांव की गली में खिन्न चित्त से भ्रमण कर रहे थे, तब तो एक वृद्धा महिला को स्वामी जी की सूरत शक्ल और पोशाक देख कर आश्चर्य हुआ। इसमें सन्देह नहीं, स्त्रियों के हृदय में दया का श्रोत पुरुषों की अपेक्षा विशेष होता है। जब तिब्बत में बौद्ध लामा, ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध संस्थापक, प्रातः स्मरणीय राजा राममोहन राय के प्राण लेने को उतारु होगये थे तब वहां पर बौद्ध महिलाओं ने राजा साहब के जीवन की रक्षा की थी। यही दशा स्वामी विवेकानन्द की भी हुई उनको

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिचय अमेरिकनों को उक्त अमेरिकन महिला द्वारा प्राप्त हुआ था। एक अमेरिकन महिला का गेरुआ वस्त्रधारी हिन्दू संन्यासी के प्रति इस भांति अपनी दया का परिचय देना क्या परमात्मा की प्रेरणा नहीं है ?

अमेरिकन महिला ने स्वामी जी से यह जान कर कि वे कौन हैं ? उनको अपने यहां भोजन के निमित्त निमन्त्रण दिया अमेरिकन लोग बड़े ही कौतुक प्रिय होते हैं। इस एमरिकन महिला ने भी स्वामी जी को अपने यहां निमन्त्रण देनेमें विशेष कौतुक समझा था। उसने समझा था कि पूर्वीय मनुष्यों का नमूना ही अपने मित्रों को दिखलावेंगे। किन्तु थोड़ी देर पीछे ही उक्त अमेरिकन महिला को ज्ञात हुआ कि ये तो गूदड़ी में लाल छिपे हुये हैं। यह "पूर्वीय नमूना" तो अद्भुत प्रतिभाशाली है। और ऐसा प्रतिभाशाली है कि पश्चिमी सभ्यता के केन्द्र-स्थल में भी ऐसे "नमूने" बहुत कम मिलते हैं। स्वामी जी के दार्शनिक विचारों को अमेरिकन महिला और उसके मित्र समझ नहीं सके! इसलिये उन्होंने दर्शन शास्त्र के एक अध्यापक को उनसे मिलने के लिये बुलाया था। यह सच है, हीरे की परख जौहरी ही जान सकता है। दर्शन शास्त्र के अध्यापक ने स्वामीजी से भेंट करते ही उनको पहचान लिया कि वह एक रत्न हैं ? उस अमेरिकन अध्यापक ने स्वामी जी का शिकागो की पार्लामेंट आफ़ रिलीजन्स (धार्मिक-सम्मेलन) के अध्यक्ष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

डा० बेरोज़ (Barrows) से परिचय कराया था। उक्त डाक्टर ने स्वामी जी को सम्मेलन में हिन्दुओं का प्रतिनिधि स्थिर किया था।

धार्मिक परिषद् में वक्तृता

धार्मिक परिषद् में स्वामी जी ने जो पहिली वक्तृता दी थी। उस से ही उनकी अमेरिका में विशेष ख्याति हो गई थी। उनका इस पहिली वक्तृता से ही अमेरिकनों पर सिक्का जम गया था। उनकी अलौकिक वक्तृता शक्ति, विचार शैली और मधुर वार्त्तालाप ने अमेरिकनों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। उन्होंने स्वयं अपने पत्र में जो शिकागोसे २ नवंबर १८९३ को भेजा था, लिखा है:—"जिस दिन परिषद्‌की उपक्रम सभा हुई उस दिन सुबह हम सब प्रतिनिधि आर्ट पैलेस नामक एक घर में पहले एकत्र हुये। सभा होने के लिये एक भव्य मण्डप तैयार किया गया था और उसके चारों ओर दूसरे छोटे २ मण्डप भी कमरों की ज़गह पर बनाये गये हैं। अपने देश से ब्रह्मसमाज की तरफ़ से श्रीयुक्त माज़ूमदार, बम्बई के श्रीयुक्त नगरकर, जैन धर्म प्रतिनिधि श्रीयुक्त गांधी और थियासोफ़ी की ओर से श्रीमती बेसेण्ट और श्रीयुक्त चक्रवर्ती आदि लोग आये हैं इनमें से श्रीयुत माज़ूमदार से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मेरी पहिले से पहिचान थी और श्रीयुत चक्रवर्ती मुझे नाम से पहचानते थे। इसके बाद हमने जुलूस की धूमधाम के साथ सभागृह में प्रवेश किया और हमारे बैठने के लिये जिस उच्च पीठ की योजना की गई थी उस पर जा बैठे। इसी पीठ पर और ६ सात सौ उच्च वर्गीय अमेरिकन लोग भी बैठे थे। यह सब समाज देखकर मैं तो एक दम घबड़ा गया, और अब इस समाज में मैं व्याख्यान देनेवाला हूं। मेरा हृदय धड़कने लगा. और जीभ बिलकुल सूखकर तलुवे में जा लगी। श्रीयुत माजूमदार का व्याख्यान बहुत ही सरस हुआ, चक्रवर्ती उनसे भी अच्छे बोले और श्रोता लोगों ने भी उन दोनों का अच्छा आदर किया। उन सबों ने बहुत उत्तम तयारी की थी। उन्हों ने अपने व्याख्यान पहले ही से पाठ कर रखे थे मुझ मूर्ख को यह विचार पहले सूझा ही नहीं, और अन्त में प्रसङ्ग आही पहुंचा। डाक्टर बेरोज ने श्रोताओं को मेरा परिचय देदिया। मैंने मन ही मन में देवी सरस्वती को बन्दना कर व्याख्यान शुरू किया।

अमेरिका के मेरे प्यारे भाई और बहिनों!

दो मिनट तक तालियों की गर्जना कानों की झिल्लियाँ फाड़ रही थीं। मैंने अपना व्याख्यान जैसे तैसे करके समाप्त किया। जब मैं बैठ गया तब जान पड़ा कि जैसे बड़ा भारी बोझा मेरे सिर से उतर गया हो। दूसरे दिन के समाचार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पत्र देखे तब मुझे मालूम हुआ कि मेरा व्याख्यान सर्वोत्कृष्ट हुआ। इस दिन से मैं विख्यात मनुष्यों में गिना जाने लगा। जिस दिन मैंने अपना वेदान्त विषयक निबंध पढ़ा उस दिन तो बेहद भीड़ हुई थी। समाचार पत्रों ने भी मेरी खूब स्तुति की थी। इस कारण सभ्य स्त्रियां तो उस दिन बहुत ही एकत्रित हुई थीं। परिषद् भर के सारे व्याख्याताओं में उत्तम व्याख्यान देने के कारण प्रायः सभी समाचार पत्र मेरी प्रशंसा कर रहे थे।

इसमें सन्देह नहीं कि स्वामी जी की इस वक्तृता ने अमेरिकन लोगों पर विशेष प्रभाव डाला था। जब उन्होंने हिन्दू धर्म पर अपना निबंध पढ़ा था तब तो सभी ने उसको बड़े चाव से सुना था। वहां के समाचार पत्रों में उनकी वक्तृता की बड़ी प्रशंसा निकली थी। अमेरिका में जिधर देखिये उधर इनकी वक्तृता की धूम मची हुई थी। न्यूयार्क क्रिटिक नामक एक अख़बारने लिखा था:—"वह (स्वामी विवेकानन्द) ईश्वर का उत्पन्न किया हुआ महान वक्ता है। उसका मज़बूत और चमत्कारिक मुख, पीले और नारङ्गी वस्त्र, उन सच्चे वचन और बहुमूल्य भाषण से कम चित्ताकर्षण करनेवाले न थे"। दूसरे अख़बार न्यूयार्क हेरल्ड ने लिखा था—"इसमें संदेह नहीं कि पार्लीमेंट आफ़ रिलीजन्स में स्वामी विवेका-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नन्द एक महान पुरुष हैं। उनकी वक्तृता सुनकर हम सोचने लगे हैं कि ऐसी विदुषी जाति के लिये पादरियों को भेजना कैसी मूर्खता है" ?

वहां की अनेक सभाओं ने स्वामीजी को अपने यहां व्याख्यान देने के लिये बुलाया था। किसी ने सच कहा है "राजा का मान केवल अपने देश में ही होता है पर विद्वान का सर्वत्र होता है"। बस इस न्याय के अनुसार ही स्वामी विवेकानन्द का अमेरिका में खूब मान हुआ। दो अमेरिकन उनके शिष्य भी हुये। जिनमें से एक मेडम लुईसी थी जो पीछे स्वामी अभयानन्द कहलाई जाने लगी थी। यह एक फ्रेंच स्त्री थी। दूसरा एक पुरुष था, जिसका नाम मिस्टर सन्डसवर्ग था जो पीछे कृपानन्द कहलाया। स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में अगणित स्थानों में व्याख्यान दिये थे। जिससे अमेरिका में वेदान्त सम्बन्धी चर्चा खूब फैली। यों स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका में वेदान्त की ध्वजा पताका उड़ाकर आर्यों के गौरव को वढ़ाया था।

इङ्गलैंड यात्रा

सन् १८९५ अक्टूबर–१८९६ दिसम्बर

अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द ने सन् १८९५ अक्टूबर में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इङ्गलैंड की यात्रा की थी। वहां वे तीन मास तक रहे थे। वहां पर इनके व्याख्यानों की खूब धूमधाम रही थी। इङ्गलैंड में स्वामीजी के व्याख्यानों के प्रभाव का अनुभव केवल इतने ही से किया जा सकता है कि एक अंग्रेज़ी अख़बार ने उस समय लिखा था :–"लण्डन में अनेक जातियों के, अनेक अवस्थाओं के मनुष्य मिलते हैं, पर इस समय इङ्गलैंड में उस तत्ववेत्ता से बढ़कर और कोई व्यक्ति नहीं है, जो अभी शिकागो में धार्मिक परिषद् हुई है, उसमें वह हिन्दू धर्म की ओर से प्रतिनिधि था।"

उन दिनों प्रोफ़ेसर मैक्समूलर भी जीवित थे, स्वामी जी ने उक्त प्रोफ़ेसर महोदय से भी भेंट की थी, और उनसे श्रीरामचन्द्र परमहंस के जीवन चरित्र और उपदेश के छापने का अनुरोध किया था। वहां मिस मारगेट नोबिल जो पीछे *भगिनी निवेदिता के नाम से भारतवर्ष में विख्यात हुईं थी इनकी शिष्या हो गईं थीं। इसके अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द के दो और भी अङ्गरेज़ शिष्य हुये थे। उनमें से एक स्वर्गीय जे० जे० गोविन था, वह जहां स्वामीजी जाते थे, उनके साथ ही साथ जाता था। दूसरा कप्तान सेवियर था, जिसने हिमालय के मायावती में अद्वैताश्रम स्थापित करने में सहायता दी थी

*भारतवर्ष में आकर भगिनी निवेदिता श्रीगौराङ्ग महाप्रभु की भक्ता हो गई थीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इङ्गलैण्ड से स्वामीजी ९वीं दिसम्बर १८९५ को अमेरिका लौट आये थे। उस समय उनके शिष्यों ने अमेरिका के कई स्थानों में स्वतन्त्र मठ स्थापित कर लिये थे। इङ्गलैण्ड से लौटकर उन्होंने "सन्डे लेक्चर" (रविवार व्याख्यान श्रेणी) शुरू किये थे। जिसमें श्रीमद्भागवतगीता तथा अन्य विषयों पर इनके व्याख्यान होते रहे थे।

भारतवर्ष को लौटना

सन् १८९६ दिसम्बर से १८९९ जून

इस भांति सभ्य देशों में वेदान्त की ध्वजा पताका उड़ाकर स्वामीजी १६वीं दिसम्बर सन् १८९६ को अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष को चल पड़े थे। साथ में कितनीही अंगरेज़ महिलाएँ और सज्जनों को शिष्य रूप में यहां लाये थे। जिस जहाज़ में स्वामीज़ी सवार थे वह १५वीं ज़नवरी सन् १८९७ को कोलम्बो बन्दर पहुंचा था। वहां पर उनका खूब धूम धाम से स्वागत हुआ फिर इसी अवसर पर स्वामीजी ने कोलम्बो से अल्मोड़ा तक यात्रा की थी। जहां कहीं वे गये वहीं पर उनका विशेष रूप से स्वागत हुआ था, स्थान स्थान में उनको अभिनन्दनपत्र समर्पण किये गये थे और उन्होंने वेदान्त का खूब प्रचार किया था। ब्रह्मचारियों के पढ़ाने के लिये दो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मठ स्थापित किये थे एक तो कलकत्ते से उत्तर की ओर मील की दूरी पर दूसरा हिमालय के पास बनाया था। रा कृष्ण मिशन का सङ्गठन किया था। १८६७ में भारतवर्ष भयङ्कर अकाल पड़ा था। स्वामीजी ने दुर्भिक्ष पीड़ित व्यक्ति के सहायतार्थ अनेक स्थानों में रामकृष्ण मिशन रिलीफ़ व स्थापित किये थे।
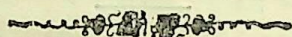
विदेश गमन

इन सब कार्यों के झंझटों से उनका स्वास्थ्य बिगड़ ग था अच्छे अच्छे वैद्यों और डाक्टरों ने उनको आब हवा ब लने के लिये अमेरिका और इङ्गलैण्ड जाने की सलाह दी थ अतएव पुनः उनको इङ्गलैण्ड जाना पड़ा और फिर वहां अमेरिका गये थे, केलीफ़ोरनिया में थोड़े दिन रहने पर उन स्वास्थ्य सुधर गया था और फिर उपदेश करने लग गये सानफ्रांसिस्को में वेदान्त सोसाईटी और एक शान्ति आश्र स्थापित किया था। जो अभी तक अच्छी स्थिति में है न्यूयार्क में रहते समय उनको पेरिस से कांग्रेस आफ़ रि जन्स का निमन्त्रण मिला था जो सन् १६०० में वहां होने वाली थी। वहां फ्रेंच भाषा में उन्होंने हिन्दू दर्शन पर क व्याख्यान दिये थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारतवर्ष को लौटना

वहां से भारतवर्ष को लौटे; पर स्वास्थ्य बहुत बिगड़ चुका था। भारतमाता का यह दुर्भाग्य है कि यहां सार्वजनिक कार्य करनेवालों का स्वास्थ्य बहुत ख़राब हो जाता है और वे अपने स्वास्थ्य की कुछ चिन्ता भी नहीं करते हैं। अतएव स्वामीजी भी अपने स्वास्थ्य की कुछ चिन्ता न करके निरन्तर कार्य करते ही रहे। रामकृष्ण सेवाश्रम साधुओं की सहायतार्थ स्थापित किया था। काशी में एक और आश्रम ब्रह्मचारियों के पढ़ाने के लिये स्थापित किया था। विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिये एक रामकृष्ण पाठशाला भी खोली थी। इसी अवसर में जापान से कई नामी जापानी उनको धार्मिक परिषद में जो उस समय जापान में होनेवाली थी, बुलाने के लिये आये थे किन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उन्होंने वहां जाने का विचार परित्याग कर दिया था।

मृत्यु

सन् १९०२ की चौथी जुलाई, भारतवर्ष में दुर्दैव उपस्थित करने को आई थी। शोक ! अत्यन्त शोक !!! भारतमाता के जिस लाल ने सात समुद्र, तेरह नदी पार कर वेदान्त की ध्वजा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फहरा कर, सभ्यताभिमानी देशों के निवासियों के हृदयों पर विजय प्राप्त की थी। आज के दिन उसी को कराल काल ने झपट लिया। दुष्टा मृत्यु ने वृद्धा भारतमाता पर तनिक भी दया नहीं की। चौथी जुलाई सन् १९०२ की रात्रि के ९ बजे पर स्वामीजी का देहान्त हुआ था शोक ! महाशोक !!! भारतमाता की गोद में से एक ऐसा पुत्र रत्न उठ गया जिसका स्थान अभी तक पूर्ण नहीं हुआ है।

स्मारक

दुःख के साथ कहना पड़ता है भारतवासियों में कृतघ्नता की विशेष मात्रा बढ़ी हुई है। नहीं तो क्या स्वामीजी के स्थान स्थान में आज कुछ स्मारक न होते ? हिन्दू जाति ! तू भले ही औरों के साथ अपनी कृतज्ञता का पूर्ण परिचय देती रही हो। पर इसमें सन्देह नहीं, तू अपने लालों के साथ सदैव निष्ठुरता का परिचय देती आई है। तू ने राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द सरस्वती को बिगानों से भी बढ़कर समझा था तूने स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ का अमेरिका और इङ्गलेण्ड के समान भी अपने यहां आदर नहीं किया। यदि हिन्दू जाति स्वामी विवेकानन्द के प्रति अपना कुछ भी कर्तव्य समझती तो आज क्या भारतवर्ष के स्थान स्थान में उनका कोई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्मारक नहीं दिखलायी पड़ता। यद्यपि कलकत्ते के निकट वेलूरमठ में रामकृष्ण मिशन ने उनका स्मारक रखने का कुछ प्रयत्न किया है, किन्तु समस्त हिन्दुओं को स्वामीजी का कुछ स्मारक बनाना चाहिये। स्मरण रहे जो जाति अपनी योग्य सन्तानों का आदर करना नहीं सीखती है उस जाति की कदापि उन्नति नहीं होती है।

स्वामीजी के जीवन पर एक दृष्टि

अब विचारना चाहिये, स्वामी विवेकानन्द में ऐसे क्या गुण थे, जिससे उनका भारतवासियों पर ही नहीं, बल्कि विदेशियों तक पर प्रभाव पड़ा है। इसमें सन्देह नहीं, स्वामी विवेकानन्द अंग्रेज़ी भाषा के अच्छे विद्वान् थे तथा और भी कई भाषाओं के ज्ञाता थे। प्रभावशाली वक्ता थे, कवि भी थे। परन्तु ये सब ऐसे अलौकिक गुण नहीं जो अन्य व्यक्तियों में न हों। भगवान की कृपा से इस समय भी भारतवर्ष में स्वामी विवेकानन्द के समान और उनसे बढ़ कर भीअच्छे अच्छे पुरुष विद्यमान हैं वक्ता और कवियों का भी अभाव नहीं है। पर स्वामी विवेकानन्द के उपदेशों के विशेष प्रभाव होने का कारण केवल उनका हृदय था उनके हृदय में भारतवर्ष और मनुष्य जाति के प्रति प्रेम भरा हुआ था। यही दशा स्वामी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रामतीर्थ की थी। जब से स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ अमेरिका से लौटे तब से दोनों की यह अपरिमित लालसा हो गयी थी कि इस वृद्धा भारतमाता को जो यन्त्रणायें मिल रही हैं, वे दूर हों। पर भारतमाता अथवा हमारे दुर्भाग्यवश उक्त दोनों पुरुष इस संसार से शीघ्र चल बसे। परमात्मा को यह स्वीकार न हुआ भारतमाता के ऐसे पुत्र थोड़े दिन तो यहां और ठहरते। स्वामी विवेकानन्द के हृदय में सहानुभूति और देशभक्ति का स्रोत कितना बह रहा था उनका पता उन पत्रों से लगता है, जो उन्होंने जापान अमेरिकादि देशों से अपने भारतीय मित्रों को भेजे थे। आज कल कई यूनिवर्सिटीज़ अपने यहां के छात्रों को अंगरेज़ी के प्रसिद्ध कवि विलियम कूपर के लेटरस् (पत्र) पढ़ाया करती हैं। नहीं जानते जब कभी किसी स्वदेशी विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा होगी तर्बी स्वामी विवेकानन्द के पत्रों को कितना उच्च स्थान प्राप्त होगा!।

प्रेम के अतिरिक्त स्वामी विवेकानन्द में एक और भारी गुण था। वह था त्याग और वैराग्य। इस समय त्याग और वैराग्य की चाहे जैसी मिट्टी पलीत हो रही हो पर सच्चे त्याग और वैराग्य बिना कभी कोई परोपकार में रत नहीं हो सकता है वर्त्तमान समय में भी रामकृष्ण परमहंस स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्याग और वैराग्य की सजीव एवम् ज्वलन्त मूर्ति हैं। इस समय लाला लाजपत राय जो त्याग और वैराग्य की निन्दा करते हैं, वह इसलिये कि आज कल जितने त्यागी और वैरागी हैं, वे त्याग और वैराग्य दोनों शब्दों की हत्या कर रहे हैं। उनका त्याग और वैराग्य बनावटी है। वे त्यागी और वैरागी बन कर अपने जीवन का बोझ समाज पर डालते हैं। अतएव इस बनावटी त्याग और वैराग्य की जितनी निन्दा की जाय उतनी ही थोड़ी है। पर सच्चे त्याग और वैराग्य की भी आवश्यकता प्रत्यक्ष प्रतीत हो रही है। इस सच्चे त्याग और वैराग्य के बलही स्वामी विवेकानन्द अमेरिका जैसे प्रकृत-वादी देश में वेदान्त की ध्वजा फहराने में समर्थ हुये थे। स्वामी विवेकानन्द अविवाहित और ब्रह्मचारी थे, सुतराम ब्रह्मचर्य ने भी त्याग और वैराग्य के साथ ही साथ उनको नव्य भारत के निर्माण करने में सहायता दी थी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसरा अध्याय

राष्ट्रीय विचार

(२)

स्वामीजी की देशभक्ति।

स्वामीजी की देशभक्ति तो शब्द शब्द में टपकती है। जापान से स्वामीजी ने जो पत्र भेजा था, वह अन्यत्र प्रकाशित है। उसको पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि स्वामीजी के हृदय में भारतभूमि के प्रति कितनी ममता थी? स्वामी विवेकानन्द वेदान्ती थे, वेदान्त का उद्देश्य अपना पराया कुछ न समझना है। पर स्वामी विवेकानन्द मातृभूमि के प्रति प्रेम का लोभ सम्वरण नहीं कर सके थे। कलकत्ता में जो अभिनन्दन पत्र (एड्रेस) उनको भेंट किया गया था उसके उत्तर में उन्होंने एक स्थल पर कहा था :—मेरे चलते समय, मुझसे एक अंगरेज़ मित्र ने पूछा था*:—"स्वामी! विलासी, प्रतापी और शक्ति शाली पश्चिम में चार वर्ष के अनुभव के पश्चात् भारतवर्ष

* स्वामी विवेकानन्द का पत्रव्यवहार पेज ६४-६५

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को अब आप कैसा पसन्द करते हो ?" मैं इसका उत्तर केवल इतना ही दे सका, "मुझे यहां आने से पहिले भी भारतमाता के प्रति ममता थी। अब उसी भारतवर्ष की धूली मेरे लिये पवित्र है। अब वह पवित्र भूमि मेरे लिये तीर्थ है। इसके अतिरिक्त उनके पत्रों में स्थान स्थान पर भारतवर्ष के प्रति प्रेम टपकता है। उन्होंने दार्जलिङ्ग से "भारती" की सम्पादिका के नाम जो पत्र भेजा था, उसमें लिखा है :—"धर्म ज्ञान का प्रचार करने के लिये प्रदेश जाने में मेरा यही उद्देश्य था कि मैं अपनी जन्मभूमि के उद्धार के लिये कुछ प्रयत्न करूं। मैं फिर योरोप जाऊंगा या नहीं सो आज निश्चयात्मक रूप से नहीं कहा जा सकता। अब भी यदि मैं जाऊंगा तो मेरा उद्देश्य केवल अपनी मातृभूमि की सेवा करना होगा वास्तव में इससे बढ़ कर और उनकी देशभक्ति का ज्वलन्त दृष्टान्त क्या मिल सकता है ?

*" I was asked by an English freind on the eve of my departure" Swami, how do you like now your mother land after four years' experience of the luxurious, glorious powerfull west" ? I could only answer. "India I loved before I came away. Now the very dust of India has become holy to me, the very air is now to me holy, it is now the holy land the place of pilgrimage, the Tirtha" (from Columbo to Almora, page 220.)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर्तमान शिक्षा पर स्वामीजी

अब हम स्वामी विवेकानन्द के विचारों की पर्यालोचना में प्रवृत्त होते हैं। स्वामी विवेकानन्द के धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक विचार चाहे जैसे रहे हों पर इसमें सन्देह नहीं उनका समस्त पुरुषार्थ भारतवर्ष के राष्ट्र निर्माण की ओर विशेष रहा था। राष्ट्र निर्माण का प्रथम साधन राष्ट्रीय शिक्षा है स्वामी विवेकानन्द का हृदय भी भारतवर्ष में शिक्षा का वर्त्तमान परिणाम देख कर विह्वल हो गया था। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता अपनी वक्तृताओं तथा पत्रों में कई स्थानों पर दर्शायी है मदरास में स्वामी जी ने एक व्याख्यान The future of India अर्थात् भारतवर्ष का भविष्य दिया था। उसने अन्यान्य बातों के साथ ही साथ स्वामीजी ने शिक्षा सम्बन्धी अपने विचार प्रकट किये थे। जिसके कुछ अंशों का अनुवाद यहां दिया जाता है। स्वामी जी ने कहा था :—"हमको जाति की धार्मिक और ग्राहस्थ शिक्षा को थामना होगा। क्या तुम उसको समझते हो? तुम को सोचना चाहिये, तुमको बोलना चाहिये, तुमको ध्यान देना चाहिये और तुमको काम करना चाहिये। पर तिस पर जाति के लिये कोई मुक्ति नहीं है। यह शिक्षा जो तुम प्राप्त कर रहे हो उसमें कुछ अच्छी बातें हैं किन्तु उसमें एक बहुत भारी बुराई है और यह बुराई इतनी अधिक है कि इसमें सभी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अच्छी बातें दब गई हैं* प्रथम बात तो यह है यह शिक्षा मनुष्य बनाने वाली नहीं है, शिक्षा न होने के समान है। जो निषेधात्मक शिक्षा अथवा ऐसी कोई पढ़ाई जिसमें अभावात्मक भरा हो मृत्यु से भी बुरी है। लड़का स्कूल भेजा जाता है और वहां पर सबसे पहिली बात सीखता है वह यह है कि मेरा बाप मूर्ख था। दूसरी बात यह है कि मेरा दादा (पितामह) पागल था। तीसरी बात यह है जितने अध्यापक हैं सब के सब कपटी बनावटी हैं चौथे यह जितने पवित्र ग्रंथ हैं सब मिथ्या हैं इस समय तक वह सोलह वर्ष का हो जाता है उसे कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। और उस शिक्षा का परिणाम यह हुआ कि लगातार पचास वर्ष के शिक्षा प्रचार होने पर भी तीनों प्रेसीडेन्सीज़ (प्रान्तों) में एक भी आदमी पैदा न हुआ। जिस किसी मौलिक पुरुष का आर्विभाव हुआ है उसने इस देश में शिक्षा प्राप्त नहीं की है दूसरे देशों में शिक्षा प्राप्त की अथवा वे एक बार पुराने विश्वविद्यालयों में मिथ्या विश्वासों को दूर करने के लिये गए हैं। यह शिक्षा नहीं है। यह केवल समाचारों का ढेर अपने मस्तिष्क में भर लेना और उन पर दङ्गा मचाते रहना

---

* यहां पर स्वामीजी का यह तात्पर्य है कि शिक्षा प्राप्त करने पर भी शिक्षा के जो गुण हैं वे मनुष्य में न आवें तो शिक्षा न होने के बराबर है न उससे कुछ लाभ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और अपने समस्त जीवन को वाटरलू का संग्राम बनाना ही शिक्षा नहीं है। हमको जीवन बनाना, मनुष्य निर्माण करना चरित्र गठन करना और विचारों को एक सा करना है यदि तुमने पांच विचार एक से कर लिये और अपना जीवन तथा चरित्र गठन कर लिया तो तुम्हारे पास उस मनुष्य की अपेक्षा अधिक शिक्षा है जो पुस्तकालय द्वारा कंठ करके शिक्षा दे सकता है। जिस गधे पर चन्दन लदा होता है। वह सिर्फ चन्दन के बोझ को ही जानता है नकि चन्दन का मूल्य पहचानता है। यदि शिक्षा केवल जानकारी ही प्राप्त करा सकती है तो इस संसार में ग्रन्थालय सब से बड़े महात्मा और विश्वकोष (Incyclopidia) ऋषि हैं। इस लिये हमारे हाथों में समस्त देश की शिक्षा का धार्मिक और ग्राहस्थ आदर्श होना चाहिये। और जहां तक हो सके राष्ट्रीय पद्धति राष्ट्रीय प्रणाली पर होनी चाहिये। हो सकता है स्वामी जी ने बतलाया और उन्होंने आगे चल कर इस व्याख्यान में धार्मिक शिक्षा की जो प्रणाली बतलाई है, उससे शायद कोई सहमत न हो, परन्तु यह सब निर्विवाद स्वीकार करेंगे कि इस देश में धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता है। इस भांति शिक्षा सम्बन्धी विचार उन्होंने कई स्थानों पर प्रकट किये हैं। स्थान के सङ्कोच के कारण यहां पर हम सब को उधृत करने में असमर्थ हैं। देवगढ़ वैद्यनाथ से २३

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वीं दिसम्बर सन् १६०० को स्वामी जी ने एक बङ्गालिन स्त्री को जो पत्र लिखा था उसका कुछ अंश यहां उद्धृत करते है जिससे उनके शिक्षा सम्बन्धी विचारों का पाठकों को और भी पता लग जावेगा। स्वामी जी लिखते हैं:—"शिक्षा" यह शब्द बहुत व्यापक अर्थ का है। विस्तृत बचन से ज्ञान दर्शक शब्दों का बड़ा संग्रह मस्तिष्क में भर लेना शिक्षा नहीं है। इसे यदि शिक्षा कहेंगे तो एक बड़े कोष को भी सुशिक्षित कह सकेंगे। उसी प्रकार अनेक प्रकार के बिषयों पर व्याख्यान दे लेना भी शुशिक्षा का लक्षण नही है। जिस पठन, मनन अथवा आचरण से हम अपनी इच्छा शक्ति का निग्रह करके उसे योग्य मार्ग पर ला सकते हैं और प्रत्यक्ष फलदायी कर सकते हैं उसे शिक्षा कहते हैं। तो फिर जिस शिक्षा से इच्छा शक्ति जागृत नहीं होती किन्तु वह निद्रा रोग से ग्रस्त होकर मृत्यु पथपर आरूढ़ होती है उसे क्या शिक्षा नाम दिया जासकता है मैं तो यह कहता हूं कि मनुष्य की बुद्धि वृद्धि के लिये पूर्ण अवकाश और स्वतंत्रता मिलने पर उसके बर्ताव में कुछ समय तक प्रमाद भी होंगे। पर मैं समझता हूं कि ये प्रमाद भी उस शुद्ध आचरण से श्रेष्ट होंगे जो केवल यांत्रिक पद्धति से होता है रहता है। यह यदि सच है तो ऐसे निर्जीव मृत पिण्डों के बने हुए समाज का सृष्टि में क्या महत्व है! ये शृङ्खलायें यदि न होतीं तो, सब राष्टों में अगुआ कहलाने का जिसे हक़ है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और जहां की भूमि सारी पृथ्वी भरको ज्ञान देनेवाली खानि है क्या वही राष्ट्र आज गुलामी का राष्ट्र और वही भूमि क्या आज मूर्खता की जन्म दात्री के उज्ज्वल नामों से प्रसिद्ध हो रही होती ।

जापान और स्वामी

(३)

जिस समय स्वामी विवेकानन्द जापान होते हुये अमेरिका गये थे, उस समय जापान का इतना नाम नहीं हुआ था, जितना अब है । पर स्वामी जी उसी समय जापान को देखकर पहचान गये थे कि अवश्य एक दिन यह देश उन्नति के शिखर पर पहुंचेगा । और इसके गुणों के सामने संसार के अन्य देशों को अपना मस्तक झुकाना होगा । उन्होंने जापान से जो चिट्ठी भारतवर्ष को भेजी थी इसमें भारतीय नवयुवकों को जापान देखने का परामर्ष दिया है । बड़े ही मार्म्मिक शब्दों में भारत वासियों को जापान से अच्छी अच्छी बातों के सीखने की अपील की है । जापान से स्वामी जी ने जो पत्र भेजा था, उसका अक्षर अक्षर पढ़ने योग्य है । इसी लिये हिन्दी पाठकों के विनोदार्थ उक्त चिट्ठी का यहां स्वतंत्र

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुवाद प्रकाशित किया जाता है:—"इस संसार में जापानी पवित्र मनुष्यों में से एक हैं। उनकी प्रत्येक वस्तु स्वच्छ और सुन्दर है। उनकी गलियां प्रायः चौड़ी और सीधी तथा नियमित रूप से पटी हुई हैं। उनके घर पिंजड़े के समान छोटे छोटे, पर बिल्कुल स्वच्छ हैं। उनके जंगली वृक्ष, सदैव हरी भरी रहने वाली छोटी पहाड़ियां प्रत्येक गांव और शहर का पिछवाड़ा बनाये हुये हैं! नाटा क़द, सुन्दर शरीर जापानी पोशाक, उनके कार्य, ढङ्ग, भाव प्रभृति सबही चित्र के समान मनोहर हैं। जापान मनोरंजन की भूमि है, बहुधा प्रत्येक घर के साथ एक छोटा सा बाग भी है। जिस में छोटी छोटी झाड़ियां, घास की चौरस भूमि, छोटे छोटे बनावटी पानी के झरने और पत्थर के छोटे छोटे पुल हैं।

ज्ञात होता है, जापानियों को वर्तमान समय की आवश्यकता पूरी तरह से सूझ गई है। उन्होंने तोपों सहित अपनी सेना का पूरा संगठन कर लिया है। कहा जाता है, उनके कर्मचारियों में से एक ने तोपों का आविष्कार किया है जिनके मुकाबिले में कोई दूसरी तोप नहीं है। वे लगातार लड़ाई के जहाज़ का बेड़ा भी बढ़ा रहे हैं। मैं ने जापानी एन्जीनियर की बनाई एक टम्बलबोर्ड देखी, जो लग भग एक मील लम्बी हैं। यहां की दिया सलाईयों की फैकृरी (कारखाना) भी देखने योग्य है। और वे इस पर भी झुके हुये हैं, जिस बात

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की आवश्यकता हो, वह अपने देश में ही बना लेना।

मैं ने बहुत से मन्दिर देखे, प्रत्येक मन्दिर में पुराने बङ्गाली अक्षर, संस्कृत में कुछ मन्त्र लिखे हुए हैं। कुछ थोड़े से ही पुरोहित संस्कृत जानते हैं, पर वह चतुर बुद्धिमान दल हैं। उन्नति की वर्त्तमान तेजी पुरोहितों के भीतर भी प्रवेश कर गयी हैं। जापान के बारे में जो कुछ मेरे हृदय में है वह इस छोटे से पत्र में नहीं लिख सकता हूं मैं केवल यही चाहता हूं मेरे नवयुवकों को प्रति वर्ष जापान और चीन आना चाहिये। जापानी लोग अब भी यह समझते हैं कि भारतवर्ष केवल भूमि है! और तुम वास्तव में हो क्या? तुम अपनी सारी ज़िन्दगी बक बक करते रहे हो, व्यर्थ बातें बनाते रहते हो? आओ! इन जापानी आदमियों को देखो। फिर जाओ लज्जा के कारण अपना मुंह छिपा लो। एक बुद्धि हान जाति, अगर तुम जाओगे तो तुम्हारी जाति खोजायगी। सहस्रों वर्ष तक अपने सिरों पर वहमों का बोझा लाद कर बने रहने वाले, सहस्र वर्ष से भोजन की छूत अछूत के सम्बन्ध में अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हो। युगान्तर के लगातार सामाजिक अत्याचारों ने तुम में से मनुष्यता (इन्सानियत) को कुचल डाला है। अब तुम क्या हो? और अब क्या कर रहे हो?......हाथ में बड़े बड़े पोथे लिये समुद्र किनारे सैर करते हो यूरोपियन मस्तिष्क कार्य के बदहज़मी और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भटकते हुए टुकड़ों को दुहराते रहते हो । सम्पूर्ण आत्मा-
तीस रुपये मासिक की क्लर्की और अच्छे कानूनदां बनने में
झुकी रहती है । यही नव्य भारत की उच्चाकांक्षा है । क्या
समुद्र में तुम को, पुस्तकों, गाउन्स (विश्वविद्यालय के वस्त्र)
और विश्वविद्यालय के प्रशंसा पत्र तथा समस्त को डुबोने
के लिये भी पर्याप्त जल नहीं है ।

आओ ! आदमी बनो !! अपने सङ्कीर्ण घोंसलों (मकानों)
में से निकलो और दूर दूर तक देखो । देखो किस भांति
जातियां बढ़ रही हैं क्या तुम मनुष्य को प्यार करते हो ? क्या
तुम अपने देश को प्यार करते हो ? तब आओ हमको उच्च
और उत्तम वस्तुओं के लिये द्वन्द करना उचित है । पीछे को
मत देखो, सब से प्यारी और समीपस्थ आवाज़ तक को
मत सुनो । पीछे को मत देखो, किन्तु बराबर सामने दृष्टि
रहने दो ।

आज भारत को कम से कम अपने एक सहस्र नवयुवक
मनुष्यों को ध्यान में रखो, मनुष्यों की न कि पशुओं की
आवश्यकता है । परमेश्वर ने तुम्हारी बनावटी सभ्यता को
तोड़ने के लिये अङ्गरेज़ी गवर्नमेन्ट को यन्त्र स्वरूप में भेजा
है । मदरास ने सब से पहिले आदमी, अंगरेज़ों को यहां टिक
ने में सहायता देने के निमित्त दिये थे । अब मदरास में कितने
निस्वार्थ आदमी हैं, जो जीवन और मृत्यु के संग्राम में नये

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पदार्थ लाने को, दीनों को सहानुभूति, क्षुधा पीड़ितों को रोटी और बहुत से आदमियों को ज्ञान की ज्योति तक तुम्हारे पूर्वजों के अत्याचारों के कारण जो पशु श्रेणी में आ चुके हैं उन्हें आदमी बनाने को तैयार हो ?

जाति की रक्षा करो

मैं नहीं जानता कि स्वामीजी के उपदेशों को पढ़कर लोगों ने क्या मतलब निकाला है ? पर मैंने अब तक स्वामी जी के जितने उपदेश पढ़े हैं, उनसे यही मतलब निकाला है कि दीन दुखियों, पीड़ितों की सहायता करना परमधर्म है। उनका कहना था, मनुष्य जाति विशेषतः मूर्ख भारतवासियों की रक्षा करनी चाहिये। स्वामी जी का हृदय दुर्बलों के प्रति अत्याचार सहन करने को तैयार नहीं होता था। मद्रास में उन्होंने अपने एक व्याख्यान में कहा थाः—"वर्त्तमान समय में मनुष्य इतने गिर गये हैं कि वे विचार करते हैं, कलियुग में हम कुछ कर नहीं सकते हैं। यदि वे केवल किसी तीर्थ स्थान में जायंगे वहां उनके पाप क्षमा हो जांयगे। यदि कोई अपवित्र मनुष्य मन्दिर में जाता है तो अपने समस्त पापों को साथ वहां ले जाता है और घर को पहले से भी बुरी दशा में लौटता है। तीर्थ पवित्र पदार्थ और मनुष्य से भरा हुआ स्थान है। किन्तु यदि कोई पवित्र मनुष्य किसी ऐसे स्थान में रहता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि वहां पर कोई मन्दिर नहीं है, तो भी वह तीर्थ है। यदि कोई अपवित्र मनुष्य किसी ऐसे स्थान में रहता है जहां सैकड़ों मन्दिर हों तो वह तीर्थ भी तीर्थ नही रहता है! तीर्थ स्थान में रहना बहुत कठिन है, यदि किसी साधारण स्थान में पाप किया जाता है तो उसका शीघ्र ही संशोधन हो जाता है पर तीर्थस्थानमें जो पाप किया जाता है उसका शीघ्र संशोधन नहीं हो सकता है। सभी उपासना का पवित्र उद्देश्य यही है कि स्वयं पवित्ररहो और दूसरों की भलाई करो वह जो दीन दुखी में' पीडित में, पीड़ित में शिव को देखता है, वही वास्तव में शिव की सच्ची उपासना करता है। और जो केवल मूर्त्ति में शिव को देखता है, उसकी उपासना प्रारम्भिक है। मन्दिरों में शिवजी के देखने की अपेक्षा, शिवजी उसी से अधिक प्रसन्न होते हैं, जिसने एक दीन दुःखी में शिव देख-कर, बिना उसके धर्म, जाति पांति का विचार करके, उसकी सहायता और सेवा की है।

एक धनाढ्य मनुष्य के एक बाग था और उसके दो माली थे। इनमें से एक माली बहुत सुस्त था और कुछ काम नहीं करता था। पर जब कभी उसका धनाढ्य स्वामी बाग में आता तो यह सुस्त आदमी हाथ जोड़ कर उसके सामने खड़ा हो जाता और कहता था कि मेरे स्वामी का कैसा सुन्दर चेहरा है और उसके सामने नाचने लग जाता था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूसरा माली कुछ बोलता नहीं था, किन्तु वह कार्य खूब करता था। सब प्रकार के फल और शाकभाजी पैदा करता और इनको अपने सिर पर स्वामी के पीछे बहुत दूर पहुंचा आता था। बस सोच देखो, इन दोनों मालियों में अपने स्वामी का कौन अधिक प्यारा होगा? बस शिव हमारा स्वामी है। और यह संसार उसकी वाटिका है। इसमें दो तरह के माली हैं। एक जो आलसी हैं, बनावटी हैं और कुछ काम नहीं करता है वह अपने शिव की नाक आंखो के सम्बन्ध में ही चर्चा किय करता है। और दूसरा वह है, जो शिव के दीन दुःखी बच्चों और पशुओं की रखवारी और रक्षा करता है। इन दोनों में शिव का कौन प्यारा होगा? जो उसके बच्चों की सेवा करता है। जो पिता की सेवा करना चाहता है, उसको पहिले बच्चों की सेवा करनी चाहिये। बस जो शिवजी की सेवा करना चाहता है, पहले उसको शिव केबच्चों की तथा इस संसार की सेवा करनी चाहिये।

गीता में कहा गया है, जो परमेश्वर के सेवकों की सेवा करते हैं, वे उसके सब से बड़े बड़े सेवक हैं। बस इसी कोअपने ध्यान में रक्खो। मैं पुनः कहता हूं कि यदि तुम पवित्र हो तो जो कोई तुम्हारे पास आवे, उसकी यथाशक्ति सहायता करो यही एक अच्छा कर्म है, इस कर्म के बल से ही चित्त की शुद्धि होती है। बस फिर जो शिव प्रत्येक मनुष्य के हृदय में रहता है स्पष्ट दिखलाई पड़ेगा। वह सदैव प्रत्येक हृदय में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रहता है। यदि प्रतिबिम्ब (दर्पण) पर किसी तरह की मिट्टी और गर्द है, तो हम अपनी मूर्त्ति नहीं देख सकते हैं। अज्ञानता और पाप ही हमारे हृदय दर्पण पर मिट्टी और धूल है। यही स्वार्थ ख़ास पाप है कि पहले हम अपना विचार करते हैं। जो यह विचार करता है, पहिले मैं खाऊंगा मेरे पास दूसरे से अधिक रुपया होगा और सब पदार्थ पहले मेरे ही पास होंगे। जो यह विचार करता है मैं दूसरों से पहिले स्वर्ग को चला जाऊंगा वह स्वार्थी मनुष्य है। निस्वार्थी मनुष्य कहता है मैं अपने भाइयों की सहायता करने से चाहे नरक को जाऊं मुझे स्वर्ग की परवाह नहीं है। यह निःस्वार्थ भाव ही तो धर्म का परीक्षण है। जिसका जितना निःस्वार्थ भाव है, वह उतना ही धर्मात्मा और शिवजी के निकट है, वह विद्वान् हो चाहे अविद्वान् वह चाहे इस बात को जानता हो, पर वह शिव के निकट अन्य व्यक्तिओं से विशेष है। स्वार्थी मनुष्य ने चाहे जितने मन्दिरों के दर्शन किये हों, चाहे जितने तीर्थ स्थानों में गया हो, कोढ़ी के समान उसने अपने को रङ्ग भी लिया हो, तब भी वह शिव से बहुत दूर है।

लाहौर में भक्ति पर व्याख्यान देते हुए, उन्होंने कहा था :—"वर्त्तमान में सब से अच्छी धर्म यह है कि प्रत्येक मनुष्य बाज़ार में जाय और वहां पर अपनी शक्ति के अनुसार एक दो छः बारह भूखे "नारायण" की तलाश करे। उन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन "नारायण" को सदैव स्मरण रखना चाहिये, हिन्दू, धर्म के अनुकूल जिसको दान दिया जाता है वह दान दाता से बड़ा है। और उस थोड़े समय तक दान प्राप्त करनेवाला स्वयं परमेश्वर है।" वास्तव में विचारा जाय तो स्वामीजी के उपर्युक्त कथन में कुछ अत्युक्ति नहीं है। आज इस देश में ऐसे अगणित नर नारियों की कमी नहीं है जो पापी पेट की ज्वाला पीड़ित हो रहे हैं। निस्सन्देह इनकी क्षुधा निवृत्ति करना परमात्मा की सृष्टि की रक्षा करना है पर जब कोई ध्यान दे तब न!

स्वामीजी के उपर्युक्त कथन से दूसरा प्रयोजन यह निकलता है कि मनुष्य को अपना चरित्र गठन करना चाहिये। बिना उज्वल चरित्र के इस संसार में सब धूल मिट्टी है।

अपने पर विश्वास रक्खो

(५)

स्वामी विवेकानन्द को भारतवासियों के स्वास्थ्य पर भी बहुत तरस आया है। स्वामी जी का कहना था और ठीक था कि शारीरिक बलहीन होने के कारण मस्तिष्क की शक्तियों का भी ह्रास हो जाता है। शारीरिक बल न होने से आत्मिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बल भी नहीं रहता है। भारतवासियों को अपने पर विश्वास नहीं रहा है, अपने एक व्याख्यान में उन्होंने कहा थाः—"यदि सभी अंग्रेज़ अपने लिये पापी समझ लें तो अफ़रीका के हबशियों से बढ़कर नहीं होंगे। परमेश्वर उन्हें आशीर्वाद दें कि वे ऐसा विश्वास नहीं करते हैं। इसके विपरीत प्रत्येक अंग्रेज़ विश्वास करता है कि वह विश्व भर का मालिक पैदा हुआ है। वह समझता हैः—"मैं बड़ा हूं और संसार के सभी कार्य कर सकता हूं"। ......हमारा अपने में विश्वास नहीं रहा है। हम अपने में अंगरेज़ मर्द और स्त्रियों की अपेक्षा बहुत कम विश्वास करते हैं। यह मेरे स्पष्ट शब्द हैं लेकिन मैं कहने से बाज़ नहीं आसकता कि क्या तुम अङ्गरेज़ पुरुषों और स्त्रियों को नहीं देखते हो कि जब वे हमारे आदर्श को ग्रहण कर लेते हैं, तब वे पागल के समान हो जाते हैं। और यद्यपि वे शासक श्रेणी के हैं तथापि अपने देशवासियों के ताने मारने और ठठोलियों के करने पर भी भारतवर्ष में हमारे धर्म का प्रचार करने आते हैं। तुम में कितने मनुष्य अङ्गरेज़ों के समान कार्य्य करते हैं। तनिक विचारो तो सही कि इस का कारण क्या है ? तुम इसका कारण नहीं जानते हो यह बात नहीं है कि तुम इसे जानते नहो, तुम उनसे अधिक जानते हो, तब फिर बात ही क्या है ? तुम विशेष बुद्धिमान हो, यह तुम्हारे लिये अच्छा है । पर साथ ही तुम्हारी यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कठिनता भी है। क्योंकितुम्हारा खून गन्धफिरोज़ा की नाई है, तुम्हारा मस्तिष्क कीचड़ है, तुम्हारा शरीर दुर्बल है। शरीर को बदलो, यह भी बदल जायगा। शारीरिक दुर्बलताके अतिरिक्त इसका कारण और कुछ नहीं है। पिछले सौ वर्ष से तुम सुधार आदर्श और इन पदार्थों के विषय में चर्चा कर चुके हो और जब ये व्यवहार में आवेंगे तब तुम कहीं दिखलाई न पड़ोगे। तुम ने सारी दुनियाँ को हज़म कर लिया है और सुधार के नाम से समस्त संसार को माना है। इसका कारण क्या है ? यह बात भी नहीं है कि तुम इसे न जानते हो इसका कारण तुम खूब अच्छी तरह जानते हो। इसका कारण यह है कि तुम दुर्बल, दुर्बल महा दुर्बल हो। तुम्हारा शरीर दुर्बल है, तुम्हारा हृदय दुर्बल है, तुम्हारा अपने में कुछ विश्वास नहीं है। शताब्दियों पर शताब्दी और एक हज़ार वर्ष तक कुचलनेवाली अत्याचारी जातियों, राजाओं और विदेशियों ने और खास तुम्हारे आदमियों ने तुम से समस्त शक्ति छीनली है। मेरे भाई ! तुम कुचले हुये, टूटे हुये अस्थि माँस रहित कीट के समान हो। सोचते हो, अब हमको बल प्रदान कौन करेगा ? मैं तुमसे कहता हूं शक्ति जो हम चाहते हैं प्रथम सीढ़ी उस शक्ति के प्राप्त करने की उपनिषद हैं और विश्वास रक्खो कि मैं आत्मा हूं। "मुझे तलवार काट नहीं सकती, हवा मुझे सुखा नहीं सकती। मैं सर्वशक्तिमान हूं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सर्वं देशी हूं" । उन्होंने एक दूसरे स्थान पर कहा है:-"हमारी सब यन्त्रणाओं की आधी जड़ दुर्बलता है"—"क्योंकि उपनिषदों का विशेष गौरव होने पर, हमारे ऋषियों का विशेष महत्व होने पर भी दूसरी जातियों से अपना मुकाबिला कर देखो, मैं तुम से स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूं कि हम दुर्बल हैं और बहुत दुर्बल हैं। सब से पहले हमारी शारीरिक दुर्बलता है। हमारी यंत्रणाओं का तीसरा हिस्सा यह शारीरिक दुर्बलता है। हम आलसी हैं हम काम नहीं कर सकते, हम मिल नहीं सकते, हम एक दूसरे को प्यार नहीं कर सकते। हम पूरे स्वार्थी हैं, हम एक दूसरे को घृणा किये बिना और ईर्षा किये बिना नहीं रहते हैं। ऐसी दशा में हमने मनुष्यों को तितर बितर कर दिया है। हम इतने स्वार्थी होगये हैं कि इस बात पर शताब्दियों से लड़ रहे हैं कि अमुक चिन्ह किस ढंग से होना चाहिये। उन व्यर्थ के प्रश्नों पर जिनसे कुछ लाभ नहीं है कि अमुक मनुष्य के देखने से हमारा भोजन बिगड़ जायगा बड़े बड़े पोथे लिख रहे हैं। पिछली कई शताब्दियों से केवल हमारा यही कर्त्तव्य रह गया है। जिस जाति ने ऐसी सुन्दर आश्चर्य जनक समस्याओं और पुरातत्व सम्बन्धी विषयों में अपने मस्तिष्क की सारी शक्ति को लगाया है वह जितनी वर्तमान उन्नति प्राप्त कर चुकी है उससे अधिक बढ़ने की आशा नहीं है और हमें इस से कुछ लज्जा भी नहीं आती है और हम इस विषय में कुछ विचार भी नहीं कर सकते हैं। हमें बहुत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सी बातें विचारनी हैं पर विचार नहीं करते हैं, विवेचना संबन्धी हमारा स्वभाव तोते के समान होगया है इसका कारण क्या है ? केवल एक शरीरिक दुर्बलता। अब हमारा मस्तिष्क कुछ करने योग्य नहीं रहा है। हमें इसका परिवर्तन करना चाहिये। हमारे नवयुवकों को बलवान होना चाहिये, सब से पहले बल यह ज़रूरी है। धर्म पीछे आता रहेगा। मेरे नवयुवक मित्रो! पहले बलवान होओ यही मेरी सम्मति आपको है। गीता के मनन करने की अपेक्षा तुम स्वर्ग के निकट फुटबाल द्वारा शीघ्र पहुंचोगे यह शब्द अवश्य ही कड़े होंगे जो मुझे तुमसे कहने हैं। मैं तुम्हें प्यार करता हूं, मैं जानता हूं कि बात कहां खटकती है। मैंने थोड़ा सा अनुभव प्राप्त किया किया है* तुम गीता अपने बाहुओं के द्वारों ज़्यादा अच्छी समझ सकोगे। जब तुम्हारे पुट्ठे कुछ मजबूत होंगे तब गीता तुम्हारी समझ में बहुत अच्छी तरह से आवेगी; तुम अपने में जुशीला खून पाकर भगवान कृष्ण की विलक्षण प्रतिभा और विलक्षण शक्ति को अधिक समझ सकोगे! जब तुम्हारा शरीर तुम्हारे पैरों पर ही स्थिति होगा और जब तुम अपने को मनुष्य समझोगे तब तुम्हारी समझ में उपनिषदों और आत्मा का महत्व बहुत अच्छी तरह से आजावेगा। बहुत से मनुष्य मेरे अद्वैत सम्बन्धी उपदेशों से बुरे विचार ग्रहण कर

*ये शब्द ताना मारने के तौर पर कहें हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लेते हैं। मेरा इस संसार में द्वैत अद्वैत अथवा और किसी प्रकार के उपदेश करने का तात्पर्य नहीं है। मेरे कहने का प्रयोजन यही है कि हम आत्मा का उच्च भाव ग्रहण कर लें, उसकी अनन्त शक्ति, अनन्त बल अनन्त पवित्रता तथा उस की अनन्त पूर्णता को प्राप्त कर लें। इस भांति उन्होंने राज योग के उपोद्घात में कहा है:—"जीवन में श्रेष्ठ पथ-दर्शक बल है। धर्म में और सभी बातों में उस प्रत्येक पदार्थ को दूर कर दो, जो तुम्हें दुर्बल करता हो"।

भारत माता के होनहार नवयुवको! स्वामी जी के उपर्युक्त शब्दों का यही तात्पर्य है कि अपने शारीरिक बल की वृद्धि करते हुये, मानसिक बलको भी बढ़ाओ। दुर्बलता के कारण तुम्हारे चरित्र में आत्मसम्मान और आत्मगौरव का जो भाव दूर होगया है, उसको लाने का प्रयत्न करो। जिस रोज तुम अपने को समर्थ समझोगे, उसी दिन इस भारत माता का शोक सन्ताप दूर होगा। स्मरण रहे, शारीरिक निर्बलता भी महापाप है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तीसरा अध्याय

सामाजिक सुधार सम्बन्धी विचार

आइये पाठक ! चलिये हम स्वामी जी को राष्ट्रीय संसार में देख चुके हैं, अब सामाजिक संसार में देखें हमारे बहुत से पाठक सोचते होंगे कि स्वामी जी के अङ्गरेज़ी में बी० ए० पास करने और पश्चिमी देशों में भ्रमण करने से पश्चिमी विचार हो गये होंगे। पर यह बात नहीं है पश्चिमी सभ्यता से स्वामीजी की आंखें चकाचौंध नहीं हुई थीं। हिन्दू जाति की वर्त्तमान बहुत सी रीतियों में वे सुधार चाहते थे, पर पश्चिमी विचारों को लेकर नहीं बल्कि अपने ऋषि मुनि-प्रणीत शास्त्र पुराणों के आधार पर उन्होंने अपने व्याख्यानों में कई स्थानों पर यह बात स्पष्ट कही है कि पश्चिमी ढङ्ग के अनुकरण करने से भारतवर्ष को कोई लाभ होने की सम्भावना नहीं है। उन्होंने मदरास में सुधारकों को फटकारते हुए एक व्याख्यान में कहा था कि मैं वर्त्तमान सुधारकों से कहीं अच्छा हूं, जब वे छोटे २ टुकड़े को सुधारना चाहते हैं तब मैं जड़ और शाखा को सुधारना चाहता हूं, उनका कार्य्य नष्ट करने का है, मेरा रचना करने का, मैं सुधार में विश्वास

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नहीं करता वल्कि विस्तार में विश्वास करता हूं।'मुझे अपने को परमेश्वर की स्थिति में रखने और समाज को यह कहने की इस रास्ते चलो, उस रास्ते मत चलो, हिम्मत नहीं होती है। मैं राम के पुल निर्माण में एक गिलहरी के समान रहना चाहता हूं, जो थोड़ी सी मिट्टी ही पुल पर रखने में सन्तुष्ट होगई थी। इस भांति स्वामी जी ने वर्त्तमान सुधारकोंके प्रति असन्तोष प्रगट किया है। पर वास्तव में वे समाज सुधार के विरोधी नहीं थे। सब से पहले प्रत्येक सुधारक स्त्री शिक्षा की आवश्यकता दिखलाता है। स्वामी जी ने भी स्त्री शिक्षा की आवश्यकता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है। पर साथही उनका कथन था कि स्त्रियों को अपने विषय में स्वयंही विचार करना चाहिये। स्त्रियों के सम्बन्ध में उनके कथन का सारांश यह है:—"उनकी बहुत सी गम्भीर समस्याएं है पर "शिक्षा" जैसे जादू के शब्द के अतिरिक्त और किसी से इसकी पूर्ति नहीं हो सकती है। सच्ची शिक्षा हम से किसी ने नहीं समझी। इसको शक्ति बढ़ानेवाली कहा जा सकता है न कि शब्दों का ढेर बस हमको भारत वर्ष में निडर स्त्रियों के लाने की आवश्यकता है। संयोगिता, लीलावती अहिल्या और मीरा वाई के समान स्त्रियां हों, स्त्रियां जो वीरों की माता होने योग्य हों। क्योंकि वे पवित्र, निस्वार्थ और बलवान भगवान के चरण छूने से जो शक्ति आती है, उस शक्ति सहित हों"।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्त्री शिक्षा के अतिरिक्त अछूत जातियों के प्रति जो स्वामी जी के हृदय में स्थान स्थान पर दया का श्रोत बंहा है। स्वामी जी मदरास में बहुत रहे थे और मदरास में ही अछूत जातिओं के प्रति बहुत कड़ाई है। इसलिये उन्होंने अछूत जातियों के प्रति बुरे बर्ताव की निन्दा की है। उनका कथन था कि भारतवर्ष मेंमुसलमानों की विजय, पददलित दीनों के लिये मुक्ति थी। यही कारण है कि हमारी जातियों में से पांचवां हिस्सा मुसलमान हो गया था। यह सब तलवार के बल से नहीं हुआ। यह ख्याल करना कि यह तलवार के बल से हुआ है, हमारे पागलपन की सीमा है। यदि तुम इस (पददलित जातिओं के उठाने) की परवाह न करोगे तो पांचवां हिस्सा क्या बल्कि तुम्हारे मदरास के आधे लोग ईसाई हो जांयगे। क्या इससे बढ़कर भी कोई अज्ञानता दुनियां में होगी जो मैंने मालावारमें देखी थी एक * पेरिया को उस गली में जाने की आज्ञा नहीं है, जिसमें एक उच्च जातिका मनुष्य जा सकता है। इतना कहकर आगे स्वामी जी ने मालावारियों को पागल और उनके घरों को पागल खाना बतलाया है। आगे उन्होंने कहा है.—धिक्कार ? तुम अपने बचों को खुद भूखा मरने देते हो और जब वे बच्चे दूसरों के पास चले जांय तो उनको भोजन कराके बलवान

* पेरिया—मदरास में एक नीच जाति है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करते हो। अब जातियों के विषय में बहुत विवाद नहीं होना चाहिये। इसका निर्णय उच्चों को नीचे गिराने से नहीं होगा परन्तु नीचों को ऊपर उठाने से होगा......एक ओर आदर्श ब्राह्मण है तो दूसरी ओर आदर्श चाण्डाल है। इस लिये चाण्डाल से लेकर ब्राह्मण तक को उठाने का कार्य होना चाहिये। इस भांति स्वामीजी जाति पांति तोड़ना तो नहीं चाहते थे पर प्रत्येक जाति का सुधार अवश्य चाहते थे। कहीं २ प्रकरणान्तर में जाति पांति की निन्दा की है। इस विषय में आगे उन्होंने और भी कहा है :—"मैंने अपने जीवन में देखा है बहुत सी जातियां बलवान हो गईं हैं"। ऐसे ही एक दूसरे स्थान पर उन्होंने वर्तमान समाज सुधारकों के रामानुज, शङ्कर, कबीर, नानक, दादू, चैतन्य आदि की तरह से सुधार करने की सलाह दी है। और भी कई स्थानों पर अछूत और पद दलित जातियों के सुधारने की सलाह दे दी है।

विधवा विवाह के प्रति स्वामीजी ने खुल्लम खुला न तो सहानुभूति दिखलाई है न निन्दा की है। पर कई स्थानों पर दबी ज़बान से इसको अच्छा नहीं समझा है। जैसे एक स्थान पर लिखा है :—"स्मरण रखो। जाति झोपड़ों में रहती है किन्तु शोक ! किसी ने उसके लिये कुछ न किया। हमारे वर्तमान सुधारक विधवा विवाह के सम्बन्ध में बहुत व्यस्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। निस्सन्देह मुझे प्रत्येक सुधार में सहानुभूति है, किन्तु जाति का विशेष भाग्य विधवाओं को पति मिलने पर निर्भर नहीं है। किन्तु सर्वसाधारण की स्थिति पर है। क्या तुमने उनको उठाया है? बस इस भांति कहीं कहीं उन्होंने विधवा विवाह के सम्बन्ध में अपने उद्‌गार निकाले हैं।

स्त्री शिक्षा, अछूत जाति और विधवा विवाह के अतिरिक्त आज कल नये और पुराने विचार के लोगों में विलायत यात्रा के सम्बन्ध में भी बहुत आन्दोलन होता रहता है। स्वामी जी विदेश यात्रा के प्रबल पक्षपाती थे। अन्यत्र उन्होंने जापान से जो चिट्ठी भेजी थी वह प्रकाशित है। उससे यह स्पष्ट पता लगता है कि स्वामी जी विदेश यात्रा के कितने पक्षपाती थे, पर उन्होंने और भी कई स्थानों पर विदेश यात्रा की स्पष्ट सम्मति दी है। उन्हें भारतवासियों का 'कूप मण्डूक" रहना पसन्द नहीं था। उनका कथन था कि भारतवर्ष से बाहर बिना दुनियां की सैर किये हम कुछ नहीं कर सकते हैं। जितने बाहर तुम जाओगे और जितना संसार की जातियों में घूमोगे उतना ही तुम्हारे देश के लिये अच्छा है"। इसके आगे कहा है जीवन का चिन्ह विस्तार है हमको बाहर जाना चाहिये विस्तार करो जीवन दिखलाओ अथवा गलो सड़ो और मरो"। इसमें और कोई परिवर्तन नहीं है। उन्होंने अपने एक पत्र में भी लिखा है "भारतवर्ष के भाग्य पर उसी दिन से छाप लग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गयी थी, जिस दिन से भारतवासियों ने म्लेच्छ शब्द का आविष्कार किया और दूसरों से मिलना जुलना बन्द कर दिया"। इसके अतिरिक्त सुना जाता है "कि स्वामीजी यहां तक तैयार थे कि जो लोग हिन्दू धर्म को ग्रहण करना चाहें उनको अपने में मिला लेना चाहिये।"

नये और पुराने लोगों में खान पान सम्बन्धी छूत छात का भी विवाद चला आता है। स्वामीजी के खान पान (भोजन) सम्बन्धी अत्यन्त स्वतन्त्र विचार थे। उन्होंने अपने व्याख्यानों में खाने पीने की छूत छात का तीव्र भाषा में खंडन किया है। भोजन सम्बन्धी वर्तमान छूत छात के विषय में उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा था—"उन पुराने विवादों को उन पुरानी लड़ाइयों को जो व्यर्थ की हैं छोड़ दो। छः सौ अथवा सात सौ वर्ष की अवनति के विषय में ख्याल करो कि वर्षों बड़े आदमी इस बात का ही विवाद करते रहे कि हमको बायें हाथ से जल पीना चाहिये अथवा दाहिने हाथ से हाथ चार बार धोना चाहिये अथवा पांच बार और हमको पांच बार कुल्ला करना चाहिये या छः बार। उन आदमियों से तुम क्या आशा कर सकते हो जो ऐसे व्यर्थ के प्रश्नों के विचार करने में अपना जीवन व्यतीत करते हैं और ऐसे प्रश्नों पर विद्वता पूर्णदार्शनिक विचार लिखते हैं। हमारे धर्म का रसोई गृह में परिणत हो जाने का भय है। अब हम में से न तो कोई वेदान्ती है न

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पौराणिक है न तान्त्रिक है। हम ठीक हैं मत छुओ, अस्पर्श हैं हमारा धर्म रसोई गृह है। हमारा परमेश्वर रसोई का वर्तन है और हमारा धर्म "मुझे मत छूओ मैं पवित्र हूं" है यदि यह दशा एक शताब्दी तक और रही तो हम में से सब पागलखाने में होंगे। मस्तिक के दुर्बल होने का यह प्रत्यक्ष लक्षण है कि जब हृदय जीवन की बड़ी सबस्याओं को ग्रहण नहीं कर सकता है और जब समस्त मौलिकता नष्ट हो गई हृदय ने सारी शक्ति फुर्ती और विचार शक्ति खोदी है। तब तो मस्तिष्क जहां कहीं छोटे से छोटा झुकाव पाता है वहीं घूमना चाहता है।

अपने एक पत्र में स्वामी जी ने लिखा है:—आज कल जड़ सुधार के विरुद्ध बोलना हमें बहुत सहज मालूम होता है। पर यह भौतिक सुधार हमें क्यों नहीं चाहिये इसलिये कि अंगूर खट्टे हैं। क्षण भर के लिये मान भी लिया जाय कि यह सुधार सचमुच ही धार्मिक उन्नति में बाधा डालता है तथापि काया वाचा और मन से केवल आध्यात्मिक उन्नति के पीछे पड़े हुए आज कितने सच्चे महात्मा भारत में हैं? यदि कहा जाय कि ऐसे मनुष्य एक लाख हैं तो बहुत समझ लो। अब क्या तुम्हारा यह कहना है कि इन एकलाख मनुष्यों के लिये तीस करोड़ लोग बैठे रोते रहें। मुसलमानों ने चढ़ाइयां करके भारत को क्यों पादाक्रान्त किया? उसका कारण यही है कि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भौतिक सुधार में हम लोग बिलकुल पिछड़ रहे थे। अच्छी तरह से कपड़े पहनना तक हम लोगों ने मुसलमानों ही से सीखा है। साधारण ऐहिक सुधार ही नहीं, किन्तु मैं जो भोग-विलास तक की तरफ़दारी करूंगा। क्योंकि उसमें ग़रीब लोगों को नवीन नवीन व्यवसाय मिलते हैं। कुछ लोगों के ऐश आराम के कारण ही बहुत लोगों की रोटियां तो चलती हैं। मरने के बाद तो हमें सारे स्वर्ग भोग मिलेंगे और जब तक संसार में रहेंगे तब तक खाने को रोटी भी न मिले। यह कहां का न्याय है ? यह जिस ईश्वर का न्याय है उसे मैं ईश्वर ही नहीं समझता। भारत का यदि कभी सच्चा सुधार होने-वाला होगा तो वह भौतिक सुधार ही से होगा इसके बिना अब तो काम ही नहीं चल सकता। अधिक अधिक विद्यादान अधिक उद्यम व्यवसाय अधिक भोजन और फिर अधिक शरीर सामर्थ यही उन्नति की सीढ़ियां हैं। अच्छा तो फ़िर धार्मिक विषयों में रुढ़ि बद्ध हुये पुरोहित वर्ग और उनकी पैदा की हुई रुढ़ियों का संहार होना चाहिये। अंगरेज़ों से अधिक अधिकार मांगने के लिये सभायें करने में आज कल युवा पुरुष दिलोजान से लगे हैं। पर अंगरेज़ लोग मन ही मन तुम्हारी इन सभाओं पर हंस रहे हैं। जो लोग हानिकारक रुढ़ियों की श्रृङ्खला से जकड़ कर दूसरों को गुलाम बनाते हैं वे क्या स्वयं स्वतन्त्र रहने के योग्य कभी हो सकते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंगरेज़ लोग यदि कल अपनी खुशी से भारत को छोड़ कर चले जांय तो भी तुम्हें वास्तव में लाभ क्या हो सकता है। तुम्हारी अयोग्यता तुम्हें उस स्वतन्त्रता का उपयोग कभी नहीं करने देगी रूढ़ियों के दास्य पङ्क में लौटनेवाले कुलामों ! तुम स्वतन्त्रता मांगते हो क्या और नये गुलाम तैयार करने के लिये !

स्वामीजी के हृदय में भारतवासियों की आर्थिक स्थिति और दरिद्रता को देख कर बहुत शोक उत्पन्न हुआ है, उन्होंने अपने एक पत्र में लिखा है :—"चीन और भारतवासियों की मृतक सभ्यता में रहने का एक कारण उनकी अत्यंत दरिद्रता भी है। सदैव साधारण हिन्दू और चीनी को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के अतिरिक्त किसी दूसरे विषय के विचार करने का अवकाश मिलता ही नहीं हैं। समझे पाठक! स्वामी विवेकानन्द जी के व्याख्यानों और पत्रों में सामाजिक विचारों की प्रत्येक स्थल पर ऐसी झलक प्रतीत होती है। अब हम इस विषय में कुछ नहीं कहेंगे कि स्वामी जी समाज सुधार के पक्ष में थे अथवा विपक्ष में। इसका निर्णय सहृदय पाठक स्वयं करें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थाध्याय

धार्मिक विचार

हिन्दुओं की वेदों पर विशेष भक्ति और श्रद्धा है। जो धर्म प्रचारक खड़ा होता है वह वेदों का ही आसरा लेता है बिना वेदों का आसरा लिये कोई धर्म प्रचारक हिन्दुओं में अपना सिक्का नहीं जमा सकता है। चाहे उसकी वेदों पर भक्ति और श्रद्धा न हो तिस पर भी उसको वेदों की शरण लेनी पड़ती है। सच्ची और सही बात के कहने के लिये पाठक मुझे क्षमा करें। मैंने एक ऐसे समाज के भीतर पहुंच कर देखा है जो संसार भर में वेदों के प्रचार करने का दावा भर रहा है और उसके नेता तथा अन्य उपदेशक गण अपनी वाणी और लेखनी द्वारा सर्व साधारण हिन्दुओं की वेदों पर श्रद्धा उभारने की चेष्टा कर रहे हैं पर उनमें से कतिपय सज्जन न तो वेदों के अनुयायी हैं न वेदों पर भक्ति और श्रद्धा रखते हैं। इसका कारण क्या है? कारण यह है कि वेद पर भक्ति प्रकट किये बिना न तो वे अपने इन्स्टीट्यूशन चला सकते हैं न सर्व साधारण में वे अपना सिक्का जमा सकते हैं। यों वे पबलिक को अन्धकार में रखकर स्वयं लीडर नेता बने हुये हैं। परमा-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

त्मन् ! ऐसे ढकोसलेवाज़ नेताओं से रक्षा कर और सर्व साधारण में ज्ञान की ज्योति का इतना विस्तार कर जिससे उनको अपने समाज के नेताओं की ढकोसलेवाज़ियों का पता लगे।

स्वामीजी का कथन था कि वेदान्त वेद का ही निचोड़ है वह वेद से परे वेदान्त को नहीं समझते थे। वेदों के विषय में जो कुछ उनकी सम्मति थी, उसका अर्थ यह है—वेद तीन बातें सिखलाते हैं पहिले उनको सुनना तब विचारना और उन पर सोचना। पहिले जब आदमी सुनता है तो उसको उस पर विचारना चाहिये उसको केवल अज्ञानता से विचार नहीं करना चाहिये पर खूब जानकर और फिर विचार करके कि वह क्या है, उस पर ध्यान देना चाहिये। तब पहिचानना चाहिये यही धर्म है। विश्वास धर्म कोई अङ्ग नहीं है। हम कहते हैं धर्म सचेत अवस्था में होता है। वास्तव में विचारा जाय तो स्वामीजी के इस कथन में कुछ अत्युक्ति नहीं है। जब हम सांसारिक विषयों में बहुत सी छान बीन करते हैं तब धर्म के विषय में केवल अन्ध विश्वास के सहारे रहना कहां का न्याय है। "पानी पीजै छान, गुरू कीजै जान" इस लोकोक्ति के अनुसार धर्म सम्बन्धी किसी विश्वास को समझे सोचे बिना अज्ञानता पूर्वक ग्रहण नहीं करना चाहिये। क्यों कि धर्म के समान कोई सच्चा सखा नहीं है स्वामीजी वेदों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को अनादि मानते थे। द्वैत विशिष्टा द्वैत और अद्वैत में परस्पर कुछ विरोध नहीं देखते थे। उनका कथन था कि यह दोनों एकही हैं अद्वैत द्वैत का प्रतिवादी नहीं है द्वैत तीनों सीढ़ियों की सिर्फ़ पहली सीढ़ी है। धर्म में सदैव तीन सीढ़ी होती हैं पहली द्वैत है और अन्त में वह अपने को सार्वभौम के साथ देखता है। इसलिये तीनों आपस में प्रतिवादी नहीं बल्कि एकही उद्देश को पूरा करते हैं। स्वामी जी संसार से विरक्त रहना बुरा समझते थे। उनका कथन था कि जब प्रति समय तुम्हारा हृदय संसार की ओर जाता है तब तुम सच्चे वेदान्ती हो। वेदान्त एक ऐसा दर्शन है जिसने मनुष्य को पूरी तरह से नीति सिखलाई है। यहां सब धर्मों का निचोड़ है वेदान्त की शिक्षाओं के सम्बन्ध में उनका यह कहना था कि यह न तो निराशावादी (Passimistic) है न आशावादी (Optimistic) है। वेदान्त इन दोनों को ही शिक्षा देता है और जिस तरह के पदार्थ हैं वैसा ही बतलाता है। यह संसार दुःख सुख हर्ष और विषाद मिश्रित है। एक को बढ़ाइये भी उसके साथ बढ़ेगा' यह संसार न तो अच्छा ही है न बुरा ही है······प्रत्येक युग में माया के विषय में समझाना बहुत कठिन है। निस्सन्देह यह कोई थोरी (कथनात्मक) नहीं है। देश काल पात्र यह तीनों विचार इस में मिश्रत हैं जो आगे नाम रूप में घट गये हैं। यह थोरी कल्पनात्मक अथवा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कथनात्मक नहीं बल्कि सच्ची है। भक्ति योग नामक पुस्तक में उन्होंने लिखा है:—"मनुष्य पुस्तकों के सहारे सच्ची आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकता है। इसके लिये गुरु की आवश्यकता है। स्वामी जी ने भक्ति योग नामक पुस्तक में गुरू और शिष्य में किन आवश्यक गुणों का प्रयोजन है, यह दर्शाया है। अवतार और मूर्त्ति पूजा को भी माना है। मूर्त्ति पूजा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है :—तुम सबही मूर्त्ति पूजक हो और मूर्त्ति पूजा अच्छी है। क्योंकि यह मनुष्य स्वभाव के संगठन में है इसके परे कौन जा सकता है केवल पहुंचे हुये मनुष्य और महात्मा लोग शेष सब मूर्त्ति पूजक हैं।

आर्य्य समाज के प्रवर्त्तक श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का कथन था कि सार्वभौम धर्म केवल वेद ही की शिक्षायें हैं। स्वामी विवेकानन्द जी का भी कथन था:—"All the other religions of the world are included in the nameless, limitless, eternal Vedic religion" अर्थात् संसार के सभी धर्म नाम रहित असीम अनादि वैदिक धर्म में सम्मिलित हैं। स्वामी जी का कथन था कि कभी किसी भी दूसरे के धर्म सम्बन्धी विश्वासों के प्रति विरोध न करना चाहिये। संसार में जितने धर्म हैं वे एक दूसरे के न तो विरुद्ध हैं न शत्रु हैं एक ही अनन्त धर्म

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की बहुत सी शक्लें हैं। एक अनादि धर्म ही सदैव स्थिति रहेगा। यह धर्म अनेक देशों में अनेक ढङ्ग से प्रकट हो रहा है। इसलिये हमें सब धर्मों की प्रतिष्ठा करनी चाहिये। इस प्रधान रहस्य को समझने के लिये सच्चाई होनी चाहिये। किसी मत (धर्म) के द्वेषी होने की अपेक्षा हमारी समस्त धर्मों से असीम सहानुभूति होनी चाहिये।

हिन्दू और बौद्धों का सम्बन्ध

बौद्ध और हिन्दुओं के सम्बन्ध में स्वामीजी का कहना था कि हिन्दू और बौद्धों में विशेष विरोध और भेद भाव नहीं है उन्होंने अपने एक व्याख्यान में प्रभु मसीह और भगवान गौतम बुद्ध की बड़ी अनोखी तुलना की थी, जिसका भावार्थ यहां प्रकाशित किया जाता है। जीज़स क्राईष्ट यहूदी था और शाक्य मुनि हिन्दू था, बस यही भेद है। यहूदियों ने क्राईष्ट की शिक्षाओं को अस्वीकार नहीं किया, उसको फांसी पर चढ़ा दिया और उसकी पूजा करते हैं किन्तु असल भेद यह है कि हम हिन्दुओं ने वर्तमान बौद्ध धर्म और भगवान बुद्ध के उपदेशों को जो समझा है उसको प्रकट कर देना चाहते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शाक्य मुनि कुछ भी नवीन मत के प्रचार करने के लिये नहीं आये थे। वे ईसामसीह के समान पुराने धर्म को पूर्ण करने के लिये आये थे न कि नष्ट करने के लिये इस भांति स्वामीजी ने महात्मा शाक्यमुनि के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुये आगे कहा है :—"हिन्दू धर्म दो भागों में विभक्त है एक लौकिक दूसरा आध्यात्मिक महात्मागण आध्यात्मिक विषयों पर विशेष रूप से विचार करते हैं ।

इस विषय में कुछ जाति पांति नहीं है। भारतवर्ष में उच्च से उच्च नीच से नीच मनुष्य साधु हो सकता है। और इस सम्बन्ध में दोनों जाति समान हैं धर्म में कोई जाति नहीं है सामाजिक स्थिति में साधारणतः जाति है। शाक्य मुनि स्वयं साधु थे उनकी कीर्त्ति इसी में है कि उन्होंने छिपे हुये वेदों में से सच्चाई प्रकट करने में उदारता प्रकट की थी और उस सच्चाई का समस्त संसार में प्रचार किया था। संसार में वे पहिले ही मनुष्य थे जिन्होंने प्रचार का कार्य किया था। वे प्रथम मनुष्य थे जिन्हें दूसरों को पहले दीक्षा देने का विचार हुआ था।

हाल में अमेरिका के एक अख़बार शायद पबलिक ओपीनियन में तिब्बत के बौद्ध धर्मावलम्बी सभाओं की प्रार्थना छपी है उसमें सन्ध्या मन्त्र और गायत्री ज्यों की त्यों है। इससे बहुत लोग अनुमान करते हैं कि भगवान बुद्ध भी शायद वेदों के प्रचारक थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उनकी कीर्त्ति इसी में है कि सब के प्रति विशेषतः अज्ञानी और दीनों के प्रति उनकी अद्भुत सहानुभूति थी। उनके कुछ शिष्यों में से ब्राह्मण भी थे। जिन दिनों बुद्ध भगवान उपदेश करते थे, उन दिनों भारतवर्ष में संस्कृत नहीं बोली जाती थी संस्कृत उस समय कुछ पुस्तकों की भाषा थी। बुद्ध के कुछ ब्राह्मण शिष्यों ने उनके कुछ उपदेशों को संस्कृत में अनुवाद करना चाहा था। किन्तु उन्होंने इसका शीघ्र उत्तर दिया :— "मैं गरीबों के लिये और सर्व साधारण के लिये हूं मुझे उनकी भाषा में बोलने दो"। इसके आगे स्वामी जी ने बुद्ध के शिष्यों ने जो वेद विरुद्ध मार्ग ग्रहण किया था, उसका ज़िक्र करते हुये कहा है:—"इसका परिणाम यह हुआ कि बौद्धधर्म की भारतवर्ष में स्वाभावतः मृत्यु प्राप्त हुई। आज उसकी जन्मभूमि भारतवर्ष में कोई भी स्त्री पुरुष अपने को बौद्ध धर्मावलम्बी नहीं कहता है"।

इसके विपरीत ब्राह्मण धर्म की भी थोड़ी हानि हुई, उसने यह सुधार करने का उत्साह और प्रत्येक को दान करने की शक्ति खोदी, जो सर्वसाधारण को बौद्ध धर्म के कारण प्राप्त हुई थी। जिसके कारण भारतीय समाज इतना उच्च था कि जिसके बारे में एक यूनान का इतिहास वेत्ता लिखता है: — "भारतवर्ष में कोई भी आदमी झूठ बोलता हुआ नहीं दिख-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लायी पड़ता है, कोई भी हिन्दू स्त्री व्यभिचारिणी नहीं प्रतीत होती है।"

हम तुम्हारे (बौद्ध और ब्राह्मण) बिना नहीं रह सकते हैं और न तुम हमारे बिना रह सकते हो। विश्वास रक्खो, जो प्रथकता हमको दिखलाई है, उससे तुम ब्राह्मणों के दर्शन और मस्तिष्क के बिना ठहर नहीं सकते हो। न तुम अपने हृदय के बिना रह सकते हैं। ब्राह्मण और बौद्धों की जुदाई भारतवर्ष के गिराने का कारण हुई है। यही कारण है कि भारतवर्ष में तेंतीस करोड़ भिखारी रह गये हैं और हज़ार वर्ष से विजेताओं का दास हो रहा है। बस अब हमको हृदय से ब्राह्मण धर्म की अद्भुत बुद्धि और उस बड़े स्वामी (बुद्ध भगवान) की पवित्रात्मा तथा मनुष्य बनानेहारी अद्भुत शक्ति को अपनाना चाहिये"। स्वामीजी के उपर्युक्त कथन से यह प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि स्वामीजी की प्रबल इच्छा बौद्ध और वैदिकों के भाव दूर करने को थी।

बौद्ध धर्म के अतिरिक्त सन् १६०० में स्वामीजी ने केलीफ़ोर्निया में एक व्याख्यान, "Chirst the Messenger" दिया था। उस व्याख्यान में ईसामसीह का अद्भुत चित्र खींचा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रिय पाठक ! आपने स्वामीजी के धार्मिक विचारों को पढ़कर क्या तत्व निकाला है ? हमने तो यह तत्व निकाला है कि आज कल जो पारस्परिक धार्मिक कलह बढ़ रहा है, प्रत्येक व्यक्ति की दूसरों के धार्मिक विश्वासों के खण्डन करने की जो रुचि बढ़ रही है, वह दूर हो। धर्म का उद्देश्य संसार में शान्ति का सञ्चार करना और सहनशीलता (Toleration) का प्रचार करना है। इसकी इस समय भारतवर्ष में बहुत भारी आवश्यकता है। जिस समय हम लोगों में एक दूसरे के धर्म सम्बन्धी विश्वासों के प्रति श्रद्धा करने की रुचि उत्पन्न हो जायगी उस दिन भारतीय राष्ट्रनिर्माण में विलम्ब नहीं लगेगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
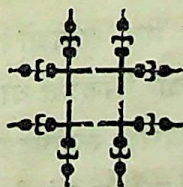
पंचमाध्याय

नव्यभारत के प्रति सन्देश

स्वामी विवेकानन्द के चाहे राष्ट्रीय, चाहे सामाजिक और चाहे धार्मिक विचारों को पढ़ियेगा, उनके अक्षर अक्षर में नव्य भारत के प्रति सन्देह है। भारतीय राष्ट्र निर्माण की प्रबल आकांक्षा है। वाक्य वाक्य में उन्होंने नव्य भारत से यही प्रार्थना की है कि "उत्तिष्ठ जागृत प्राप्य वराश्निबोधत" उठो जागो और अपनी मातृ भूमि की सेवा करो सेवा भी कैसी नीच भाव से नहीं, बल्कि उच्च भाव से करो। मनुष्य मात्र की सेवा करो; दुःखियों की सेवा और सहायता करके ही परम पिता परमेश्वर की कृपा का आलिङ्गन प्राप्त करो। मनुष्य मात्र को विचार स्वतन्त्रता प्रदान करो। किसी के विचार और कार्य पर रोक और छाप मत लगाओ। स्वामी जी का यह सिद्धान्त था और सच्चा सिद्धान्त था कि वहां समाज कार्य कर सकता है जिन्होंने विचार स्वातन्त्र्य और कार्य को जहां तक उन से दूसरों को हानि न पहुंची हो स्वतन्त्रता दी हो। वास्तव में कार्य और विचार स्वातन्त्र्य पर छाप लगाने से समाज और मनुष्यों के हृदय से उत्साह की ज्योति क्षीण हो जाती है। सो भारतवर्ष के प्यारे नवयुवकों! सब से प्रथम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस देश में विचार स्वातन्त्र्य की रक्षा करो। किसी के विचारों पर छाप मत लगाओ। मत भेद होने पर परस्पर जो कलह की कुटेव पड़ गई है, उसको दूर करो। चाहे जैसा दूसरों से हमारा मत भेद हो पर स्मरण रखो जैसा हमको स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचार प्रकट करने और कार्य करने का अधिकार है, वैसा ही दूसरों को है। यह कहां का न्याय है कि हम स्वयं तो अपने विचार स्वतन्त्रता पूर्वक प्रकट करें और कार्य भी मन चाहा करें पर दूसरों के कार्य और विचार पर छाप लगावें। खेद है कि भारतवर्ष में कोई मनुष्य अपने धार्मिक सामाजिक और राष्ट्रीय विचारों को प्रकट नहीं कर सकता है। प्रथम सन्देश नव्य भारत के प्रति यही है।

दूसरा सन्देश नव्यभारत के प्रति यह है कि अपने घोंसलों में ही बैठे मत रहो कूप मण्डूक मत बने रहो। बाहर जाकर देखो कि किस भांति अन्य जातियां उन्नति के निमित्त डग बढ़ा रही हैं। जापान से स्वामी जी ने जो पत्र भेजा था वह अन्यत्र प्रकाशित है नव्य भारत को उस पत्र का एक एक अक्षर अपने हृदय पटल पर अङ्कित करना चाहिये। विचारा जायतो यह ठीक है कि हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों ने भी अनुभव प्राप्त करने के अनेक साधनों में से एक देशाटन रक्खा है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतएव देशाटन से वंचित रहकर अपने मानसिक विचारों पर अपने हाथों से ताला ठोंकना है।

एक पत्र में स्वामीजी लिखते हैं—जापान में मुझे एक मज़ेदार बात मालुम हुई कि जापानी लड़कियां समझती हैं कि यदि वे अपनी गुड़ियों पर सच्चे हृदय से प्रेम करती हैं तो गुड़ियां जीवित हो जाती हैं। जापानी लड़की अपनी गुड़िया को किसी प्रकार का कष्ट न होने देने में बड़ी सावधानी रखती हैं। मेरा भी ऐसा ही विश्वास है कि सम्मति के योग से हमारे यहां के जो लड़के बड़े हुये हैं वे यदि अपने गरीब छोटे भाइयों पर कुछ न कुछ प्रेम करें तो यह मृतप्राय भारत थोड़े ही समय में आन्दोलन द्वारा जीवित हो जायगा। अहा हा! विचारे भारतवर्ष! क्या तेरी दृष्टि केसामने ऐसे योगी, योगिनी भी कभी आवेंगी जो जीवन के सारे भोग बिलासों को त्याग करके केवल संन्यस्त वृत्ति से क्षण क्षण पर अवनति के गढ़े में गिरने वाले अपने देश भाइयों का उद्धार करने के लिये अपना हाथ आगे करेंगे? सच्ची सहानुभूति और सच्चे प्रेम के बल से दाम्भिक और राक्षसी वृत्ति के लोगों के विचार साफ़ तौर पर ठीक किये जा सकते हैं। इस बात का मुझे इस छोटी सी जीवन यात्रा में भी अनुभव हो चुका है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एक दूसरे स्थान पर स्वामी जी कहते हैं कि यदि निर्धन लड़का शिक्षा के पास नहीं आ सकता है तो शिक्षा लड़के के पास जानी चाहिये। इस देश में अगणित स्वार्थत्यागी संन्यासी हैं, जो गांव गांव में धर्म की शिक्षा प्रचार करते हैं। क्या उनमें से कुछ अध्यापक स्वरूप में अपने को संगठन करके, गार्हस्थ शिक्षाका प्रचार नहीं कर सकते हैं" प्यारे नवयुवको! स्वामी विवेकानन्द सच्चे संन्यासी थे, इसलिये उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा का भार संन्यासियों पर सौंपना चाहा है उन्हें क्या ख़बर थी कि अब साधु, संन्यासियों का भीख के रोट डकारने के अतिरिक्त और कुछ कर्त्तव्य नहीं रहा है। प्यारे नवयुवको! इन कनफटे योगी, वैरागी, साधुओं का भरोसा मत करो। यदि तुम सचमुच शिक्षा प्रचार करके अपने देश वासियों को अज्ञान के फंदे से छुड़ाना चाहते हो तो स्वयं शिक्षा प्रचारक (Educational Missionaries) बनो यदि तुम्हारे हृदय में देश के प्रति सचमुच कुछ भी ममता है तो शिक्षा प्रचार के निमित्त संन्यास धारण करो इस से बढ़कर और पवित्र कार्य क्या हो सकता है कि हम मूढ़ जनों के हृदय से अज्ञानान्धकार को मेंट दें। क्यों भाइयों! क्या तुम अपने देशवासियों में शिक्षा प्रचार के लिये कमर कसकर तैयार हो। स्वामी जी का यह भी सन्देश था कि भारतवर्ष की बिना धर्म का आसरा लिये कदापि उन्नति नहीं हो सकती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पश्चिमी देशों में भले ही राजनीति प्रधान रही हो। पर भारतवर्ष में राजनीति नहीं बल्कि धर्म प्रधान है। धर्म का नाम सुनकर पाठक ! सहमिये नहीं, न चौंकिये धर्म कोई सङ्कीर्ण पदार्थ नहीं है। क्या तुम समझते हो कि आत्मा विभु है अथवा अणु, वृक्षों में जीव है या नहीं ऐसे विषयों पर मग्ज़ पच्ची करना धर्म है कदापि नहीं। ये विषय तो विद्वानों के विद्या विनोद के लिये और दार्शनिक विचारों में रमने के लिये हैं। धर्म का अर्थ है, दुर्बलों की रक्षा करो, बलवानों का अत्याचार उन पर मत होने दो। न्याय और सत्य की सदैव शरण ग्रहण करो। अज्ञानियों के हृदय में ज्ञान की ज्योति का प्रचार करो। मूढ़ जनों को चेतावनी दो कि वे उस महा प्रभु की मङ्गलमय सृष्टि में अपने स्वत्वों को पहचानें अपने अधिकारों को मत नष्ट होने दो, उनकी रक्षाकरो, अपने कर्तव्य पालन में डटे रहो, जीवन संग्राम में सम्हल सम्हल कर अपने डग बढ़ाओ बस धर्म का यही तत्व है इस गूढ़ तत्व के भूल जाने से ही तो हमारी यह अधोगति हुई है। सुतराम् लोग धर्म का मर्म न जानने के कारण ही धर्म को बुरा कहते हैं। आत्म रक्षा तथा देश रक्षा से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है।

स्वामी जी ने अमरीका से जो अपने एक मित्र को पत्र लिखा था उसमें उन्होंने अपने देश के दरिद्र और पतितों की दशा सुधार को ही परम धर्म बतलाते हुये में यों लिखा है:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

"यहां के जेलों का प्रबन्ध इतना अच्छा होता है कि उसका यदि वर्णन किया जाय तो तुम्हें सच भी न मालूम होगा, वह प्रत्यक्ष देखना ही चाहिये। अमरीका में बिल्कुल निरक्षर कैदियों को भी कुछ न कुछ व्यवसाय सिखाया जाता है और उन्हें बड़ी ममता से रखते हैं। इस कारण उनकी चित्तवृत्ति में इतना अन्तर पड़ जाता है कि फिर वे बहुधा जेलखाने का मुख नहीं देखते। परन्तु हमारे करोड़ों निरक्षर भाइयों की आज क्या दशा है? इन दुर्बल लोगों के विषय में हमें कैसा जान पड़ता है इसका केवल विचार करने ही से शरीर पर रोयें खड़े हो जाते हैं। बतलाओ भला आज कौन सा मार्ग खुला है जिससे वे विचारे अपनी दशा सुधार सकें? वे चाहे जितना कष्ट सहें, चाहे शरीर क्यों न खपा डालें परन्तु उन ग़रीबों की उन नीच स्थिति के लोगों की, उन पतित जनों की दशा में क्या आज रत्ती भर भी फ़र्क पड़ने की आशा है। उनका न कोई मित्र है न कोई सहारा है। उनके लिये सब दिन समान हैं। दुष्ट रीति रिवाज़ों ने, अदूर दर्शी समाज ने, आज न जाने कितने दिनों से उन्हें नीचे को ही दाबने का प्रयत्न जारी कर रक्खा है। पर इस दाब का मूल अब तक उन्हें नहीं मिला। सच पूछिये तो वे यह भी भूल गये हैं कि हम भी मनुष्य ही हैं और इसका परिणाम? इसका परिणाम दासत्व। कुछ विचारवान् लोगों के मन में यह बात कुछ वर्ष पहले ही आ गई थी;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर दुर्भाग्य की बात तो यह है कि इस सब अनर्थ का कारण उन्होंने आर्यधर्म बतलाया। उन्होंने समझा कि आर्यधर्म-जो आज जगत् में सब धर्मों से बड़ा धर्म है—का लय होना ही हमारी दशा सुधारने का एक मात्र उपाय है। पर मित्र ! तुम खूब ध्यान में रक्खो कि इस में धर्म की कुछ भी लाग नहीं है। इस के विरुद्ध आर्यधर्म तो यही कहता है कि "सर्वं खल्विदं ब्रह्म"। इस अनर्थ के कारण पूछिये तो आर्यधर्म के तत्वों को व्यावहारिक स्वरूप देने में लापरवाही की गई और सच्ची सहानुभूति तथा प्रेम की ओर ध्यान नहीं दिया गया। परमेश्वर ने एक बार बुद्ध रूप से इस भूमि में अवतीर्ण होकर स्वयं अपने आचरण द्वारा तुम्हें यह दिखला दिया कि प्रेम का स्वरूप कैसा होना चाहिए। अत्यन्त दरिद्र, अत्यन्त विपद्-ग्रस्त और अत्यन्त पापी या पतित लोगों के साथ भी तुम्हारा कैसा वर्ताव होना चाहिये सो उन्होंने तुम्हें सिखला दिया; पर इस शिक्षक को तुम ने पीठ ही दिखलाई। तुम, कान होने पर भी बहरे, और आंखें होने पर भी अंधे बने। यहूदी लोग जिस प्रकार क्राइस्ट गुरु का उपहास करने के कारण, शापग्रस्त होकर, पृथ्वी भर में भटकते फिरे, और कहीं उन्हें जगह नहीं मिली, उसी प्रकार, ऐसे अनेक महात्माओं का अनादर करके तुम ने यह कर्म-दशा अपने ऊपर खींच ली है। चाहे जो आवे और चाहे जिस रीति से तुम्हें फिरावे। अपनी ऐसी दशा तुम ने अपने हाथों ही कर ली है। अरे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पाषाणहृदय पुरुषों! तुम्हें यह नहीं जान पड़ता कि तुमने आज तक जो अत्याचार किया उसी के कारण तुम अब गुलाम बने हो। यह तुम नहीं जानते कि अत्याचार और दासत्व एक दूसरे के सगे भाई हैं और ये सदा सहचारी होते हैं।

कदाचित् तुम को स्मरण होगा कि मैं जब पांडुचेरी में था तब एक पण्डित से विदेश-यात्रा के विषय में बातचीत हुई थी। उसके वे पशु-तुल्य हाव-भाव और वह "कदापि नहीं!" वचन तो मैं जन्म भर नहीं भूलूंगा! ये समझते हैं कि भारत ही सारा जगत है और बस हमीं जगत् में श्रेष्ठ हैं! पर इन अरण्य-पण्डितों को कैसे मालूम हो कि इस सुन्दर भूमि पर तीस करोड़ कीड़े जो आपस में अत्याचार का खेल मचा रहे हैं उसे देख कर सारा संसार आज हंस रहा है? अब यह सब दशा बदलने के लिये हमें कमर कसना चाहिये। आर्य धर्म, और उसी का प्रत्यक्ष स्वरूप जो बौद्धधर्म है उसका आचार हमें वेग से शुरू करना चाहिए। अपने कार्य की पवित्रता पर अपने हृदय में पूर्ण विश्वास, ईश्वरीय सहाय के विषय में पूर्ण विश्वास और दरिद्र तथा विपद्ग्रस्त भाइयों को मुक्त करने के लिए चाहे जो कर डालने का असीम साहस रखने वाले वीर पुरुष हमें आज चाहिये। आज तक नीच जाति कहला कर अत्याचार सहनेवाले अपने भाइयों को उन की उस दशा से मुक्त करना, उन्हें सब प्रकार से मदद करना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और सर्वत्र समभाव उत्पन्न करना ही जिन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य मान रखा रखा है ऐसे धार्मिक मनुष्यों की आज हमें ज़रूरत है।

सर्व समता का तत्व जिस में इतनी उत्तम रीति से बताया है, ऐसा धर्म, आर्यधर्म को छोड़ कर, पृथ्वी की पीठ पर, और एक भी नहीं है! पर ग़रीब बिचारे पीछे पड़े हुए वर्ग पर लगातार अत्याचार करने वाला धर्म भी, आर्यधर्म को छोड़ कर दूसरा नहीं है! पर, भैया रे! इस में धर्म का कोई दोष नहीं–किन्तु धर्म के नाम पर जिन्होंने अत्याचार करने वाले रूढ़िरूप शस्त्रास्त्र निर्माण किये उन भोंदू लोगों का ही यह सब प्रताप है।

अस्तु; धैर्य्य न छोड़ना। "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" यह भगवानकृष्ण का वाक्य स्मरण करो और काम के लिए कमर कसो। मुझे तो जन्म भर यही काम करने की आज्ञा हुई है। सांसारिक सुख किसे कहते हैं, इसको तो मुझे कल्पना भी नहीं है। मेरे भाई बन्धु और इष्ट मित्र भूख से, मेरी आंखों देखते, तड़फड़ा कर मर गये; जिनकी भलाई के लिये मैं खपा उन्हींने उलटी मेरी हंसी की; मेरे विषय में अविश्वास उत्पन्न किया; पर मित्र! यह भी एक तरह से अच्छा ही हुआ। अत्यन्त आपदावस्था एक बड़ी पाठशाला है। ऐसा एक भी साधु अथवा तत्ववेत्ता नहीं मिलेगा जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस पाठशाला में न पढ़ कर तैयार हुआ हो। इस शिक्षा के लाभ जानना चाहो तो ये हैं कि इस से अन्तःकरण में सच्ची सहानुभूति की प्रेरणा होती है और मनोधैर्य आता है; पर सब से बड़ा लाभ यह है कि प्रचण्ड शक्तियों के आघात से चाहे इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का बात की बात में, चकनाचूर हो जाय, तथापि न डिगनेवाली असीम इच्छाशक्ति भी इसी शिक्षा से उत्पन्न होती है। जिन्होंने मेरा उपहास किया उन के विषय में मेरी बिलकुल ही द्वेषबुद्धि नहीं। वे तो बुद्धिमत्ता की दृष्टि से अब तक छोटे बच्चे हैं! लोग उन्हें बड़े और चतुर भले ही कहा करें पर इस से सच्ची बड़ाई और चतुराई क्या थोड़े ही मिल सकती है? इन्हें अपनी उंचाई पर से जो क्षितिज दीख पड़ता है उसके आगे का जगत् उन्हें नहीं मालूम है। इन के महत् कर्त्तव्य देखो तो बस इतने ही कि खाओ पीओ, खूब चैन उड़ाओ और मनुष्यगणना में अधिकता करो! इन आनन्दी प्राणियों को इस के आगे देखने की आवश्यकता नहीं रहती। हज़ारों वर्षों से अत्याचार के नीचे पिस कर जो निःसत्व, दरिद्र और तेजहीन हो रहे हैं ऐसे हमारे ही भाइयों की मचाई हुई चिल्लाहट से इन की निद्रा भंग नहीं होती और न इन के चैन में बाधा उपस्थित होती है। प्रत्यक्ष परमेश्वर के ही अनन्त स्वरूप, पर हजारों वर्षों की अत्याचारी रीतियों से वे आज भारवाहक जानवर कैसे बन गये हैं—और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उन्हें ऐसे जीने से मरना क्यों क़बूल हो रहा है-इसका विचार भी इन बड़े कहलाने वाले लोगोंमें स्पर्श नहीं करता ! तथापि इसका पूर्ण विचार जिन्होंने किया है, जिन्हें इस विषय में रामबाण मात्रा मिल गई है-और यह कूट प्रश्न हल करने के लिए जिन्होंने कमर कस ली है—ऐसे महात्मा भी जन्म ले चुके हैं। अतएव, मित्र ! जो इन उपायों का चिन्तन करे वे ऐसे क्षुद्र कीटकों की चिनचिनाहट की ओर ध्यान ही न दें—यही ठीक है।

अब तुम्हें एक और विशेष बात बतलानी है, सो यह कि, ऐसे काम में श्रीमान् कहलानेवालों पर बिलकुल ही विश्वास न करना। ये लोग बिलकुल ही-मृतपिण्ड—मिट्टी के धोंधे—होते हैं। इस काम के लिए, तुम्हारे समान ग़रीब, हलके दरजे के, परन्तु विश्वसनीय मनुष्य योग्य हैं। ईश्वर पर पूर्ण विश्वास रखो—और जो कुछ करना हो सो सरल, खुले मार्ग से करो-उस में आड़, परदा या लांप-झांप नहीं चाहिए। ग़रीबों पर सच्चा प्रेम रखो, और मदद की आवश्यकता ही होगी तो वह परमेश्वर की ओर से मिलेगी—और फिर मिलेगी—इस में कुछ भी सन्देह न रखना। यही बोझा हृदय में और यही विचार सिर में सदैव रखकर आज बारह वर्ष से मैं भटकता हूं। अपने देश के श्रीमान् और बड़े कहलाने वाले लोगों से मैं मिला और अब अन्त में इस परदेश में मदद की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भीख मांग रहा हूं। मुझे विश्वास है कि अन्त में वह परमात्मा मेरी सहायता करेगा, इस में कुछ भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। यदि कदाचित् भूख और शीत से इस देह का यहीं पात हो गया तो, हे भारत के मेरे तरुण मित्रो ! मैं तुम्हारे लिए एक सम्पत्ति छोड़ जाऊंगा। दीन, दुर्बल निराश्रित और अत्याचार के नीचे दबने वाले मेरे बान्धवों के सुख के लिए तुम अपना जीवन दे दो। तुम विरासत के नाते से मेरे इसी वचन का निर्वाह मेरे बाद करो। जाओ ! इस क्षण उस पार्थ-सारथी के मन्दिर को जाओ और मेरे वचन के निर्वाह करने की शपथ करो। ऐसा करने से वह अशरण-शरण, जिस ने गोकुल में गोपालों की रक्षा की, जिस ने अति शूद्र गुह को निर्भरालिंगन देने में आगा पीछा नहीं किया, जिस ने बुद्धावतार में वेश्या के निमंत्रण को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर के उस का उद्धार किया, जिस ने समाज में अत्यन्त तुच्छ समझे जानेवाले भक्तों के लिए अवतार लिये, जिस ने उनके संकटों में दौड़ कर उन की रक्षा की, वही भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हारी सहायता करेगा। तो, फिर, प्रति दिन अधिकाधिक अवनति के गर्त्त में गिरने वाले अपने तीस करोड़ भाइयों का उद्धार करने की शपथ तुम कहते हो न ?

यह एक दिन का काम नहीं है, और यह मार्ग चारों ओर भयंकर झाड़ झंखाड़ों से खूब भरा हुआ है। पर डरो मत,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कार्य्य में लगो। तुम्हारे पीछे तुम्हारी रक्षा के लिए देखो यह पार्थ-सारथी आयुध सहित खड़ा है। अच्छा तो फिर लो उस का नाम, और हज़ारों वर्षों से जो यह पापों की पर्वत-राशि संचित हुई है उस में आग लगा दो, यह अभी जल कर ख़ाक हो जायगी। आओ आगे! देखते क्या हो? काम बहुत बड़ा तथा विकट और अपना सामर्थ्य अत्यन्त अल्प है, इसलिये डिगो मत! हम सब ज्ञान के पुत्र और भगवान् के बालक हैं। "यत्र योगेश्वरः कृष्णो तत्र श्रीर्विजियो भूतिः"।

इस प्रयत्न में हज़ारों पतन होंगे, पर अन्य हज़ार उन की जगह लेंगे। रोग क्या है, इस का निदान हुआ है और चिकित्सा भी तुम्हें मालूम हो चुकी है। अब दृढ़ विश्वास रख कर चिकित्सा में लगो; पर फिर एक वार बतलाये देता हूं कि बड़े लोगों की मदद की अपेक्षा मत रखो और कलुषित हृदय से की हुई उन समाचार पत्रों की समालोचनाओं की भी मत परवाह करो। घाम (धूप) न देखो, बादल न देखो, भूख न देखो, प्यास न देखो, अधिक क्या, यह देह भी अपना मत समझो। इसे परमेश्वर के कार्य्य में अर्पण करो। पीछे मत देखो। हमारे पीछे पीछे कोई आता है या नहीं, यह विचार भी न लाओ। बराबर आगे-आगे-आगे बढ़ो।"

सब से बढ़कर नव्यभारतवर्ष के प्रति स्वामीजी का यह सन्देशहैः—"हे, भारत मत भूल, तेरी आदर्श देवियां, सीता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
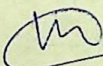
सावित्री और दमयन्ती हैं, । मत भूल, तेरे आदर्श देव त्यागियों के त्यागी उमानाथ शङ्कर हैं। भारतवासियो ! स्मरण रहे, तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन, तुम्हारा जीवन इन्द्रियजनित सुख के लिये नहीं है, न यह सब किसी व्यक्ति विशेष के सुख के साधन हैं। इस बात को मत भूलो कि तुम अपने जन्म से ही माता के लिये बलिदान किये गये हो। हे बीरो ! साहस धारण करो और इस बात का अभिमान करो कि तुम हिन्दुस्तानी हो। अभिमान पूर्वक कहो मैं भारतवासी हूं । प्रत्येक भारत वासी मेरा भाई है। चाहे फटे पुराने चीथड़े पहने हो पर तुम उच्च स्वर से कहो कि भारतवासी मेरे भाई हैं, भारत-वासी मेरे जीवन हैं, भारतवर्ष के देवी और देवता मेरे परमेश्वर हैं। भारत वर्ष का समाज मेरे बालपन का पालना है। मेरी युवावस्था की विलास वाटिका है । मेरे बुढ़ापे का एकान्त स्थान है। कहो प्यारे भाईः—"भारतभूमि" मेरे लिये सब से बड़ा स्वर्ग है, भारत माता की भलाई में मेरी भलाई है और रात्रि दिन प्रार्थना करो–तू जगत की माता है, तू ही स्वामी है। मुझे बीरता प्रदान कर, तू शक्ति की माता है, मेरी कायरता दूर कर और मुझे मनुष्य बना"। बस यही नव्य भारत के प्रति स्वामी जी का सन्देश है।

प्यारे भाइयों ! चेतो अब कब तक अज्ञान रूपी निद्रा की गोद में करवट बदलते रहोगे । प्यारे नव युवको ! भारत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माता की मनोहर सन्तानों !! इस देश की एक मात्र आशाओं !!! अब अपना जीवन आदर्श बनाओ अपने चरित्र का आदर्श संगठन करो अपनी मातृ भूमि को भी आदर्श बनाओ जिस दिन तुम में आदर्श नर नारी उत्पन्न होंगे उसी दिन तुम्हारी मनुष्य समाज में परिगणना होगी। बस यही सन्देश नव्य भारत के प्रति है। परमात्मा हमारे नवयुवकों को इतना आत्मिक बल दें कि उनको अपने पर और अपने देश पर दृढ़ विश्वास हो। यही हमारी हार्दिक इच्छा है। प्यारे मित्रों ! ऋषि मुनियों के इस वाक्य को मत भूलो कि "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"।

Entered in Database

Signature with Date

॥ समाप्त ॥

DIGITIZED C-DAC 2005-2006

10 JUN 2006

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओंकार बुकडिपो (पुस्तक भंडार)-प्रयाग।

सब सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि ओंकार बुकडिपो नामक एक बृहत् पुस्तकालय प्रयाग में खोला गया है। जिस में हिन्दी साहित्य की सब प्रकार की पुस्तकें विक्रयार्थ रक्खी जाती हैं। कन्याओं तथा स्त्रियों के लिये तो जो संग्रह इस पुस्तकालय में किया गया है वैसा शायद सारे भारत वर्ष भर में न होगा। बालक और बालिकाओंको इनाम देनेके लिये सब प्रकार की उत्तम और शिक्षाप्रद पुस्तकें यहां मिलती हैं उच्च कक्षा के हिन्दी साहित्य प्रेमियों के लिये तो यह पुस्तकालय भण्डार ही है। यही नहीं इस पुस्तकालय का अपना प्रेस भी है। अंग्रेज़ी हिन्दी और उर्दू का सब प्रकार का टाइप मौजूद है। इसमें हिन्दी भाषा की उत्तमोत्तम पुस्तकें छापी जा रही हैं। हिन्दी भाषा के लेखक जो उत्तम पुस्तकें स्वतंत्र लिखें या अनुवाद करें और प्रकाशन का भार ओंकार बुक डिपो को देना चाहें वे कृपा करके मेनेजर से पत्र व्यवहार करें। कमीशन एजेंट जो हमारी पुस्तकें बेचना चाहते हैं वे भी पत्र व्यवहार करें उनका उचित कमीशन दिया जायगा।

मेनेजर ओंकार बुकडिपो, प्रयाग

कन्या-मनोरञ्जन

एक अनोखा सचित्र मासिक पत्र

कन्याओं तथा नव वधुओं के लिये कन्या मनोरंजन एकही अद्वितीय सचित्र मासिक पत्र है। यदि आप को अपनी पुत्रियों बहिनों तथा नववधुओं को विद्यावती, गुणवती, मधुर भाषिणी और सदाचारिणी बनाना है तो आप कन्यामनोरंजन अवश्य मगाइये। मूल्य भी ऐसे उत्तम मासिक पत्र का केवल १।) साल है डांक महसूल सहित साढ़े ६ पैसे मासिक पड़ते हैं।

मेनेजर कन्या मनोरञ्जन प्रयाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ओङ्कार आदर्श-चरितमाला।

सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि ओंकार प्रेस प्रयाग ने संसार के आदर्श पुरुषों के जीवन चरित निकालने आरम्भ कर दिये हैं। प्रत्येक जीवन चरित का मूल्य केवल ।) आ है। प्रत्येक जीवन चरित में लगभग १०० पृष्ठ होते हैं औ चरित नायक का एक सुन्दर चित्र भी दिया जाता है। प्रत्ये मास में लगभग दो जीवन चरित निकाले जाते हैं। इस प्रक ४०० जीवन चरित निक... जायंगे। यदि आप अपना त अपने बालक तथा बालिकाओं की उन्नति चाहते हैं तो इ पढ़िये और अपने बच्चों को पढ़ाइये। जो लोग अपना न ग्राहकश्रेणी में पहले लिखा लेंगे और रुपया भेज देंगे उन पास १२ जीवन चरित घर बैठे पहुंच जायंगे। प्रत्येक जी चरित छपते ही सेवा में भेजा जाया करेगा। डांक महसूल देना पड़ेगा। जो लोग रुपया पेशगी न भेजकर ग्राहक श्रेण में नाम लिखाना चाहते हैं उनको वी० पी० और डांक मह सहित प्रत्येक जीवनी ।=) में भेजी जायेगी।

छपे हुए जीवन चरित	निम्न लिखित छप रहे हैं
१—स्वामी विवेकानन्द	१—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
२—स्वामी दयानन्द	२—छत्रपति शिवाजी
३—महात्मा गोखले	३—लोकमान्य दादा भाई नौरोज
४—समर्थ गुरु रामदास	४—स्वामी शङ्कराचार्य
५—स्वामी रामतीर्थ	५—महात्मा गौतम बुद्ध
६—राणा प्रतापसिंह	६—महादेव गोविन्द रानाडे
७—गुरु गोविन्द सिंह	७—गुरु नानक
८—आत्मवीर सुकरात	८—भीष्म पितामह
९—नेपोलियन बोनापार्ट	९—दानवीर जे० एन० टाटा
१०—धर्मवीर पं० लेखरामजी	१०—धनकुबेर कारनेगी

मैनेजर ओङ्कार प्रेस, प्रयाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.